RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मार्च-2024 | वर्ष - 16 | अंक : 02 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

होलिका दहन

फागुन महीने की पूर्णिमा को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस अवसर पर लकड़ी घास फूँस का बड़ा ढेर लगाकर एक भड्डरी या ब्राह्मण के द्वारा आग लगाई जाती है। यज्ञ भी इसी दिन किया जाता है। बुहत कीमती पकवान बनाए जाते हैं। रंग गुलाल की रंगाई होती है शराब भंग पी जाती है और स्त्रियों के साथ नाँच रंग होता है। होली रात्रि में सूर्योदय से पहले जलाई जाती हैं। होली कथा भविष्य पुराण में आई है। नारद राजा युधिष्ठर को होली की कथा सुनाते हैं कि हिरण्य कश्यप की बहन और प्रहलाद की बुआ होलिका को आग में डालकर जला दिया
गया था इसी दिन होली जलाई जाती है। राक्षस की बहिन ही हत्या की खुशी में नाँच रंग अबीर गुलाल डालकर होली मनाई जाती है। कथा में आया है कि हिरण्य कश्यप राक्षसों का राजा था और आर्यों का घोर विरोधी था। आर्य इन देवताओं के नाम पर निरपराध पशुओं की बलि देकर हिंसा करते थे। उसने अपने राज्य में पशु बलि बन्द करा दी और हत्यारे आर्य ब्राह्मणों को जेल में डाल दिया। ब्रह्मा विष्णु की पूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया और इनका नाम लेने और ब्राह्मण के पाखण्ड पर दण्ड देने लगा। इसके भय से ब्राह्मण और उनके देव विष्णु ने मिलकर हिरण्य कश्यप के वध करने की योजना बनाई और कपटी वेष बनाकर विष्णु ने नकली शेर की खाल ओढ़कर खम्भे से छिपकर उस अनार्य राजा को मार डाला। प्रहलाद जो उनका लड़का था उसे बरगला कर अपनी ओर मिला लिया। कुटुम्ब द्रौही प्रहलाद अपनी बुआ को धोखा देकर ले गया और आर्यों द्वारा उसे आग में जलवा दिया और स्वयं बच गया।

विधि विधान : फागुन पूर्णिमा के व्यतीत होने पर सुबह पहर में होली जलाई जाती है। उससे एक पक्ष पूर्व होली रखी जाती है लकड़ी कण्डे इकट्ठे किए जाते हैं और पूर्णमासी को जला दिए जाते हैं। परिवा के दिन नाच रंग होता है अबीर गुलाल से होली खेलते हैं घरों मे अच्छे पकवान बनाते हैं और स्त्री पुरूष सभी नशे में धुत होकर रिश्ते नाते बंधन टूट जात हैं लज्जा खूटी पर रख दी जाती है और खुलकर हँसी मजाक होता है ससुर बहू को बहू ससुर को देवर भाभी को जेठ छोटी भाभी से खूब विनोद मनाते है। हिन्दुओं की घोर अश्लीलता का यह त्यौहार है अगर इस अवसर पर कोई हिन्दू परदा को रिश्ते वाल स्त्री से भी भोग कर बैठे तो कोई दण्ड
की व्यवस्था नही है। परिवा के दिन हिन्दू होली की परिक्रमा कर अक्षत डालते हैं और ढोलक मंजीरों के साथ गाते बजाते हैं। पूर्णिमा के दिन रात्रि में सब लोग इकट्ठे होते हैं और होली के पास उत्तर या पूरब की ओर मुँह करके बैठते हैं फिर एक ब्राह्मण द्वारा होली में आग लगाई जाती है कुँवारी हिन्दू कन्याएँ रात में ही जाती हैं। थाली में भोजन और दान ले जाती हैं और होली का पूजन कर वह भोजन दान ब्राह्मण को देती है। गेहूँ, जौ, चना की बालें भूनी जाती हैं। ब्राह्मणों को दान दिया जाता है। राक्षस दमन की खुशी में सभी हिन्दू एक - दूसरे के गले मिलते हैं। गाँजा भांग शराब छक कर पिए जाते हैं।

उद्देश्य एवं रहस्य : यह आर्य और अनार्य के संघर्ष की एक खून भरी कहानी है। हिरण्य कश्यप अनार्य आदिवासी राजा था जिनके वंशज आज शूद्र हैं राजा कश्यप को शेर की खाल ओढ़कर मुँह छिपाकर मारा था ताकि पहचाने न जा सके और कश्यप का लड़का प्रहलाद भी न जान सके कि जो लोग उससे मिले हैं उन्हीं ने उसके पिता की हत्या कर दी है। नरसिंह अवतार की कहानी महज शूद्रों के विद्रोह को रोकने की नियत से गढ़ी गई है जो मनगढ़ंत है। राजा हिरण्य कश्यप के राज्यकाल के समय की समस्त पुस्तके और साहित्य को जला डाला गया बाद में प्रहलाद को भी मार डाला गया। जिस समय आर्यों ने यह विद्रोह अनार्य राजा के विरुद्ध कथा और शूद्र राजा को मार डाला तो अनार्य शूद्र जाति की स्त्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया और उसी की परम्परा में भी समाज के सवर्ण ठेकेदार दलाल गरीबों दलितों की माँ बहनों की इज्जत के साथ खेलते और होली के हुड़दंग के नाम पर इन्हें अपनी हविश का शिकार बनाते हैं। हर साल पर्व के नाम पर रंग, गुलाल लेकर इनके घरों में इनकी स्त्रियों के पास पहुँच जाते है। कितनी विडम्बना है कि सैकड़ों वर्षो से इस दलित शूद्र जाति ने हिन्दुओं के इस अत्याचार को हँसकर स्वीकारा है। उसने यह भी न सोचा कि यह उसी के राजा और उसी के वंश के विनाश के यादगार की कहानी होली का पर्व है और आज के दिन सवर्ण हिन्दुओं को जो महिलाओं से मिलने की छूट मिल जाती है उसी के फलस्वरूप वह हिन्दू उस शूद्र की स्त्रियों के साथ सालों भी बलात्कार जैसे कु कर्म करता रहता है।

होली के त्यौहार पर गले मिलकर रंजिश उससे बदला न लें और अपनी पीड़ा भूल जाये।
भेद भाव मिटाने का नाटक रचा जाता है। इसका अर्थ है कि सारे वर्ष जुल्म अत्याचार हत्या लूट ये सवर्ण हिन्दू करता है और शूद्र इन अपराधों का शिकार होता है। इस अवसर पर सवर्ण हिन्दू यह गले मिलकर अपने ऊपर किए गए कुकर्म अपराधों को भूल जाने की सलाह देता है। ताकि शूद्र उससे बदला न लें और अपनी पीड़ा भूल जाये।

इस त्यौहार पर ब्राह्मणों की पौ बारह होती है। भोजन दान हफ्तों चलता है। झोली भर-भर कर दान दिया जाता है। हाथी, घोड़ा, गाय, अन्न, सोना, चाँदी, बर्तन जो जैसा दान दे पाता है। ब्राह्मणों को दान देता है। यह ब्राह्मण की स्वार्थ पूजा का त्यौहार है बाजार से करोड़ों रुपए की घी, तेल, अबीर, गुलाल, रंग पिचकारी आदि सामग्री खरीद कर खर्च कर दी जाती है इससे गरीब पर कर्ज बढ़ता और बनियों के घर बनते हैं गरीब गरीब कर्ज लेकर खर्च करता है और वैश्य वर्ण चौगुने लाभ पर बेचता है। यह शूद्रों की बरबादी का त्यौहार है।

वास्तविकता यह है कि होली शूद्रों पर अत्याचार की यादगार है। शूद्र इसे भूल जाएँ और अपने ही राजा और राज महिला होलिका की हत्या भूलकर उन्हें ही पापी अत्याचारी समझने लगें। यह त्यौहार उसी षड्यन्त्र की कड़ी है, इस प्रकार यह त्यौहार शूद्र जाति के लिए अपमान शेषण दमन और अत्याचार की कहानी है। इसे शूद्रो को नहीं मनाना चाहिए।

साभार :
हिन्दुओं के व्रत-पर्व और त्यौहार
एस.एल. सागर

कांशीराम जी इतिहास के पन्नों पर एक अमिट हस्ताक्षर

प्रा. महेन्द्र ज. राउत

भारतीय संविधान के शिल्पकार, विश्वरत्न डा. बाबा साहब भीमराव रामजी आम्बेडकर के अथक संघर्ष और प्रथम तथा द्वितीय गोलमेज परिषदों में, ब्रिटिश सरकार के समक्ष, भारतीय दलितों के पक्ष में दिये गये अकाटय तर्कों एवं तथ्यों के परिणामस्वरूप 20 अगस्त 1932 को ब्रिटिश सरकार ने ऐतिहासिक 'कम्युनल अवार्ड' घोषित किया, इस 'अवार्ड' के चलते निकट भविष्य में भारतवर्ष में भारतवर्ष के शासन और प्रशासन में दलितों–शोषितों की उचित भागीदारी एवं सम्मान की जिन्दगी जीने के अधिकार एवं अवसर प्राप्त होने तय थे। परंतु स्वतंत्रता आंदोलन के एक अग्रणी नेता मोहनदास करमचंद गांधी जी जिद के आगे डा. बाबा साहब आम्बेडकर को हतबल होना पड़ा और 24 सितंबर, 1932 को गांधी–आम्बेडकर के बीच एक समझौता हुआ जिसे 'पूना–पैक्ट' के नाम से जाना जाता है, यही वह मनहूस दिन था जब दलितों को भारत के राजकाज में अपना उचित प्रतिनिधित्व एवं सम्मान की जिन्दगी जीने का अवसर का त्याग करके, चंद सहूलियतों पर ही संतोष करना पड़ा।

ये सहूलियतें भी छिन गई होती परंतु डा. बाबा साहब आम्बेडकर अंत तक लड़ते रहे और सारी बाधाओं को पार करके, स्वतंत्र भारत के संविधान के रचनाकार बन कर दलित–शोषितों के इस अल्पाधिकार को संवैधानिक दर्जा दिलाने में कामयाब हुये। डा. बाबासाहेब आम्बेडकर के असामयिक निधन से दलित–शोषितों की उत्थान गाथा के एक युग का अंत हुआ और दलित समाज फिर किसी नये मसीहा का इंतजार करता रहा।

24 सितंबर, 1932 की एक तथाकथित महात्मा की जिद ने दलितों के चेहरों से मुस्कान छीन ली, उसके ठीक डेढ़ वर्ष के पश्चात 14 मार्च, 1934 को पंजाब प्रांत के रोपड़ जिले के खवासपुर गांव में एक अद्वितीय बालक ने पहली किलकारी भरी, मानों कह रहा हो, ''बाबा आपके साथ जो छल किया गया है, उसका बदला चुकाने में आ गया हूँ'' माता बिशन कौर और पिता हरिसिंह के घर जन्मे इस बालक का नामकरण हुआ। कांशीराम, हरिसिंह तेलासिंह रामदसियाँ, गौत्र चौकड़ी, रामदसियाँ सिख पंथ, पूर्वाश्रम के अछूत चमार और व्यवसाय से किसान थे, उनके तीन पुत्र और चार पुत्रियाँ हुईं, जिनमें कांशीराम जी ज्येष्ठ थे और स्वभावतः सबसे लाड़ले।

अतिशूद्र वर्ग के होने के बावजूद भी हरिसिंह का परिवार अन्यों की अपेक्षा कुछ हद तक सम्पन्न था, और जैसा कि कांशीराम जी खुद बताते हैं कि, ''हम सब भाई शारीरिक दृष्टि से दबंग थे, लड़ाई झगड़ों के लिए सदा तैयार रहते थे। हमारे खानदान ने शुरू से ही लाचारी को नकार दिया था। हम तो इस अहं में रहते थे कि किसी की क्या मजाल कि कोई हमें हाथ लगाये।''

कांशीराम जी का बचपन बड़े लाड़–प्यार और ठाठ–बाट में बीता, किसी बात की कमी नहीं नहीं थी। परंतु किसान का परिवार था, परिश्रम करना तो पैदाइशी गुणों में शामिल था ही। कांशीराम जी भी बचपन से ही सभी घरेलू कामों में हाथ बंटाया करते थे। किसी भी कार्य को उन्होंने कभी ना नहीं कहा। प्रसन्नवत् परिश्रम करने की इस प्रवृत्ति ने उनके स्वाभिमान, आत्मविश्वास, निर्भयता आदि को बल दिया।

कांशीराम जी ने चौथी कक्षा तक की शिक्षा सरकारी प्राथमिक स्कूल, मलकपुर से पुरी की मलकपुर गांव खवासपुर से दो किलोमीटर की दूरी पर है। पांचवीं से आठवीं तक की उनकी शिक्षा, इस्लामिया स्कूल, रोपड़ में, नवमी एवं दसवीं की शिक्षा डी.ए. वी. पब्लिक स्कूल में तथा महाविद्यालयीन शिक्षा बी.एस.सी गवर्नमेंट कॉलेज रोपड़ में पूर्ण हुई। कांशीराम जी एक होनहार छात्र थे। तत्कालीन समय में रोपड़ क्षेत्र के रामदासियाँ सिंख पंथ में बी.एस.सी. तक की पढ़ाई पूरी करने वाले कांशीरामजी एकमात्र छात्र थे।

अपने बाल्यकाल और छात्र जीवन को याद करते हुए कांशीराम जी कहते हैं कि, ''मैं स्वयं जातिवाद का शिकार तो नहीं हुआ मगर मेरे इर्दगिर्द ऐसे कई लोगों को देख रहा था, जो इस विषमतावादी व्यवस्था के शिकार बन कर करूणाजनक जिन्दगी बसर कर रहे थे। मुझे खीज होती थी इस बात पर। वे भले ही मेरे रिश्तेदार नहीं थे, मगर वे भी हमारे समाज के लोग थे। उन पर जुल्म केवल इसिलये ढाये जाते थे क्योंकि वे गरीब और निरक्षर थे। यह सब देख कर दिल ही दिल में मैं बेचैन हो जाता था।

1956 में, उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिये कांशीराम जी ने देहरादून के स्टाफ कॉलेज में दाखिला लिया। संघ लोकसेवा आयोग की तैयारी करते हुए उन्होंने कुछ समय तक देहरादून स्थित भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग में नौकरी भी की। इसी वर्ष 6 दिसम्बर, 1956 को महामानव डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर का महापरिनिर्वाण हुआ। इस दुःखद समाचार से कांशीराम जी का एक सहयोगी मित्र ''श्री गैनी'' तीन दिनों तक गहरे शोक में डूबा रहा। इस घटना से कांशीराम जी को डा. बाबासाहब आम्बेडकर के बारे में जानने का मौका मिला। बाबासाहब का नाम तो उन्होंने सुना था परंतु, उनके व्यक्तित्व के बारे में वह पहली बार 1956 में अपनी उम्र के 22वें वर्ष में परिचित हुये।

देहरादून में, अपने दो वर्ष के प्रशिक्षण काल के दौरान, कांशीराम जी किसी अच्छी नौकरी के लिये प्रयास कर रहे थे। 1957 में महाराष्ट्र के पूना शहर में स्थित, केंद्र सरकार द्वारा संचालित 'सेंट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ मिलिटरी एक्सप्लोझिव' में उन्हें नौकरी का बुलावा आया। दूसरी बार बुलावा आने पर वे इस विभाग में संशोधन अधिकारी के पद पर कार्य करने हेतु पूना आये। पूना शहर, जो 1932 के गांधी–आम्बेडकर समझौते का साक्षी था। उस पूना शहर में कांशीरामजी 1958 में नौकरी हेतु पधारे। आज ऐसा महसूस होता है कि, यह मात्र संयोग नहीं था, अपितु प्रकृति ने किसी महत्कार्य के लिये स्वयं यह आयोजन किया था। किसी नये पर्व के आगमन का यह शुभ संकेत था।

1958 से 1963 तक, इन पांच वर्षों में कांशीरामजी सिर्फ एक बार अपने पैतृक गांव खवासपुर गये थे। उस वक्त अपने सभी भाई–बहनों के लिये ढेर सारे उपहार भी साथ ले गये थे। पंद्रह–बीस दिनों तक रूकने के बाद वे वापस पूना चले आये और इसके पश्चात् फिर कभी अपने जन्मस्थली वापस नहीं गये।

पूना में नौकरी काल के दौरान 1963–64 में, एक ऐसी घटना घटी, जिसने कांशीराम जी के जीवन को एक नया मोड़ दे दिया।

सेंट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ मिलिट्री एक्सप्लोझिव में प्रतिवर्ष की सरकारी छुट्टियाँ घोषित की जाती थीं, जिनमें बुद्ध जयंती एवं डा. बाबा साहब आम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में अवकाश दिया जाना सुनिश्चित था। परंतु 1963 के अंतिम माह में जब 1963 की छुट्टियाँ तय की जा रही थीं उस समय विभाग के उच्चाधिकारियों ने एक परिपत्र जारी करके बुद्ध जयंती और डा. बाबा साहब आम्बेडकर जयंती की छुट्टियाँ रद्द करवा दीं, और उसके बदले में बाल गंगाधर तिलक जयंती पर एक दिवस अवकाश और दीपावली की छुट्टियों में एक दिवस की अतिरिक्त छुट्टी घोषित कर दी। अधिकारियों के इस भेदभाव पूर्ण रवैये से अनुसूचित जाति के कर्मचारी आहत तो हुये, परंतु उनमें विरोध का साहस नहीं था। वरिष्ठ अधिकारियों से वे डरते थे। ऐसे में, दिनाभाना नामक एक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ने इस निर्णय का विरोध किया। दिनाभाना राजस्थान का निवासी था। उसे विभाग की वर्क्स कमेटी से निकाल दिया गया। जिसके विरोध में उसके विभाग की अनुमति लिये बगैर कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया। दिनाभाना के इस दुस्साहस के लिए उसे नौकरी से निलम्बित कर दिया गया। उन दिनों दिनाभाना उसी उपविभाग में कार्यरत था, जहाँ कांशीराम जी संशोधन अधिकारी थे।

दिनाभाना के निलंबन से कांशीराम जी बेचैन हो उठे और उन्होंने दिनाभाना के पक्ष में तथा व्यवस्था के खिलाफ कर्मचारियों को संगठित करना शुरू कर दिया। संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों से पत्राचार भी किया। कानूनी सलाह भी ली। और अंततः रक्षा मंत्रालय तक इस केस को ले गये, जिसके फलस्वरूप दिनाभाना को न्याय दिलवाने में वे कामयाब हुये। व्यवस्था ने बुद्ध जयंती और डा० बाबा साहब आम्बेडकर जयंती पर अवकाश पूर्ववत लागू किया और साथ ही दिनाभाना को सम्मानपूर्वक नौकरी पर वापस ले लिया। इस सम्पूर्ण प्रकरण में कांशीराम जी ने काफी समय, बुद्धि, और धन खर्च किया। अपने पुराने साथी 'श्री गैनी' की याद और अब दिनाभाना के निलंबन प्रकरण से उन्हें डा. बाबा साहब आम्बेडकर के जीवनकार्य के विषय में जानने की उत्सुकता होनी स्वाभाविक थी। ऐसे में उन्हीं के विभाग के एक और कर्मचारी साथी श्री डी के खापर्डेजी ने कांशीराम जी को डा. बाबासाहब आम्बेडकर द्वारा लिखित, 'ॲनीहिलेशन ऑफ कास्ट' किताब भेंट की। इस किताब को पढ़ कर कांशीराम जी बहुत प्रभावित हुये। जितना अधिक वे बाबासाहब के जीवन और मिशन को समझते गये, वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की भूमिका उनके हृदय में आकार लेने लगी।

डा. बाबा साहब आम्बेडकर के जीवन और मिशन के साथ–साथ उन्होंने महान समाज क्रांतिकारक, महात्मा ज्योतिराव फुले और बहुनोद्धारक राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज के कार्यों का भी अध्ययन किया।

कांशीरामजी ने देखा कि हजारों वर्षों सक चली आ रही इस ब्राह्मणवादी व्यवस्था का लाभ सिर्फ मुट्ठीभर लोगों को मिल रहा है, जबकि वे लोग इस व्यवस्था के शिकार बने हुये हैं उनकी संख्या इस देश में पचासी प्रतिशत है। सिर्फ पंद्रह प्रतिशत लोगों ने इस देश के शासन और प्रशासन पर, जाति के आधार पर अपना कब्जा बरकरार रखा है, और बहुसंख्यक समाज गुलामी और लाचारी का जीवन जीने के लिये अभिशप्त है। जिस व्यवस्था को बदलने के लिए डा. बाबासाहब आम्बेडकर और अन्य महापुरूषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन दांव पर लगा दिया था, आज वही व्यवस्था, नये परिवेश में और भी विकराल रूप धारण कर चुकी है। बाबासाहब के सपनों का यथार्थ में बदलने की जिम्मेदारी जिन लोगों के कंधों पर थी, वे अपनी अपनी डफली और अपना–अपना राग अलाप रहे हैं। पूना पैक्ट की अंतिम परिणति का जो कुछ लाभ जिस दलित समाज के एक तबके को मिल पाया है, वह तबका, अपना घर, परिवार, बच्चे और ऐशो आराम की जिन्दगी के मजे लूट रहा है। अपना आत्मसम्मान गिरवी रख कर ब्राह्मणवादी व्यवस्था को चमचा बना बैठा है। बाबा साहब के अखिल भारतीय स्तर के मिशन को चंद लोगों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये एक जाति विशेष की राजनीति का हथियार बना लिया है, और बहुसंख्यक समाज अज्ञान और अंधकार की खाई में गिरता जा रहा है। वह हृदयविदारक चित्र देखकर कांशीराम जी अत्यंत बेचैन हो उठे।

डा. बाबा साहब आम्बेडकर के सम्पूर्ण मिशन और ब्राह्मणवादी व्यवस्था के शिकार बहुसंख्यक दलित शोषित समाज की वर्तमान स्थिति, पूरी तरह समझने के बाद कांशीराम जी इस नतीजे पर पहुंचे कि, यह बहुसंख्यक समाज जाति–उपजाति के आधार पर छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित है, और हर टुकड़ा एक अल्पजन समाज है, जो सिर्फ अपने बलबूते पर लड़ने में असमर्थ हैं। वे जान गये कि, जब तक ये सारे अल्पसंख्यक समाज एकजुट होकर बहुजन समाज में परिवर्तित नहीं हो जाते, तब तक उन्हें इस देश के शासन और प्रशासन में भागीदारी एवं सम्मान की जिन्दगी जीने का अवसर कदापि नहीं मिल सकता।

कांशीराम जी ने इस समाज को जागृत एवं संगठित करने का बीड़ा उठाया। वे जानते थे, जातिवाद पर आधारित इस गैर बराबरी की व्यवस्था को बदलना आसान नहीं है। पूर्ण विषमता को परम समानता में बदलने के लिये सम्पूर्ण समर्पण की जरूरत है। सच्ची लगन, निष्ठा, ईमानदारी और संगठित शक्ति का सही

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

दिशा में उपयोग किया जाये, तो इस विषमवादी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ा जा सकता है।

यह वह समय था जब कांशीराम जी के माता–पिता उन्हें विवाह के बंधन में बांधने की तैयारी कर रहे थे। उनकी संगाई भी कर दी गयी थी। सरकारी नौकरी में ऊंचा ओहदा, अच्छी तनख्वाह और आराम की जिन्दगी जीने के सारे अवसर कांशीराम जी को उपलब्ध थे, परंतु, अब काफी देर हो चुकी थी। वे अपने उपेक्षित दलित, शोषित, समाज को ब्राह्मणवाद की जंजीरों से मुक्त कराने के लिये अपना स्वयं का जीवन दांव पर लगाने का निश्चय कर चुके थे। अतः उन्होंने अपनी माताजी को 1964 में एक चौबीस पन्नों का लम्बा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा, ''मैं अब विवाह नहीं करूंगा, घर और परिवार नहीं बसाऊंगा, विवाह हो या मृत्यु, घर परिवार के किसी भी कार्यक्रम में शरीक नहीं होऊंगा। व्यक्तिगत रूप से मेरी कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। बहुजन समाज ही अब मेरा परिवार है। घरवालों के लिये मैं मर चुका हूँ।'' साथ ही उन्होंने विनम्रतापूर्वक माफी मांग कर अपनी सगाई भी तोड़ दी।

कांशीराम जी अपने इस निश्चय के प्रति इतने कठोर थे कि अक्टूबर, 1973 में अपने पिता श्री हरिसिंह के देहांत पर भी वे अपने गांव नहीं लौटे। अंतिम संस्कार में भी वे शरीक नहीं हुये।

अपनी नौकरी के बारे में कांशीराम जी कहते हैं कि, ''1964 में जैसे ही मैंने समाज के लिये काम करने का निश्चय किया उस दिन के बाद मैं कभी अपनी नौकरी पर कार्यालय में नहीं गया, मैंने इस्तीफा तो नहीं दिया था, मगर नौकरी पर भी नहीं गया, मुझे मेरे कार्यालय से कुछ रकम भी हासिल करनी थी, मगर मैं वह रकम लेने के लिये भी उस कार्यालय में नहीं गया।''

डा. बाबासाहब आम्बेडकर के सपनों को पूरा करने का संकल्प कांशीरामजी ले चुके थे, परंतु चिर निद्रा में सोये हुये समाज को जगाना आसान काम नहीं था। इसके लिये प्रतिबद्ध संगठन एवं समयबद्ध नियोजन की आवश्यकता थी। बाबासाहब के जीवन भर के परिश्रम से प्राप्त संवैधानिक सहूलियतों का लाभ दलित, शोषित, समाज के कुछ लोग हासिल कर चुके थे। परंतु अपने कर्ज को भूल कर अपना व्यक्तिगत हित साधन में मशगूल थे। इन लोगों के बारे में डा. बाबा साहब आम्बेडकर ने असंतोष व्यक्त किया था। सरकारी सहूलियतों से लाभान्वित दलितों के अपने समाज बंधुओं के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैये की निंदा और भर्त्सना करते हुये, बाबासाहब ने कहा था कि, ''मुझे पढ़े–लिखे लोगों ने धोखा दिया है।'' बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के पश्चात् पढ़े–लिखे कर्मचारियों का यह वर्ग अपने समाज के प्रति और भी अधिक उपेक्षा से भरा गया था। इस वर्ग के पास कुछ हद तक साधन सम्पत्ति तो एकत्र हो चुकी थी, पंरतु उनमें सामाजिक दायित्व की सही सोच और दिशा का अभाव था। कांशीरामजी ने सर्वप्रथम इसी वर्ग को संगठित करना शुरू किया।

सबसे पहले अप्रैल, 1971 को पूना के खिड़की क्षेत्र के एक मद्रासी स्कूल में कांशीरामजी ने एक बैठक आयोजित की। जिसमें डी.के.खापर्डे, तम्बाखे, मधु परिहार, भिमराव दलाल, मनोहर आटे समेत 50–60 कर्मचारी उपस्थित थे। इस बैठक में कांशीराम जी ने बताया कि, ''आज देश भर में अनुसूचित जाति–जनजाति के 17 लाख शिक्षित कर्मचारी हैं। इन्हें एक झंडे के नीचे लाकर, गैर राजनीतिक संगठन बनाकर, डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के सपनों को साकार किया जा सकता है।'' कांशीराम जी की इस सोच से प्रभावित होकर कुछ कर्मचारी उनके साथ जुड़ गये और अगले छह माह में एस.सी/एस.टी/ओ.बी.सी मायनॉरिटीज कम्युनिटीज एम्पालाइज एसोसिएशन, पुणे नामक स्थानिक संस्था की नींव डाली गयी। 14 अक्टूबर, 1971 को पूना के नहेरू मेमोरियल हॉल में इस संस्था की एक विशाल बैठक बुलायी गयी, जिसमें लगभग एक हजार कर्मचारी सम्मिलित हुये। कांशीराम जी स्वयं इस पंजीकृत संस्था के अध्यक्ष थे।

उन दिनों कांशीराम जी पूना के डेक्कन जिमखाना क्षेत्र में रहते थे। सुबह से शाम तक साईकिल पर वे विभिन्न सरकारी/गैर सरकारी दफ्तरों में संगठन बनाने और बढ़ाने के लिए घूमते रहते। जहाँ खाना मिला खा लेते, रात हुई, सो जाते। अक्सर वे श्री डी.के. खापर्डे जी के घर पर खाना खाया करते थे। उन्होंने 142, रास्तापेठ पुणे में एक कार्यालय भी खोला था, जो म. फुले कॉटर गेज स्कूल के ठीक सामने स्थित था। 1972 में ही ''सिवर एम्प्लॉईज प्रॉब्लेम' एण्ड देयर सोल्यूशन'' विषय पर उन्होंने एक सेमीनार का आयोजन भी किया था।

पूर्ण स्तर पर संस्था बनाना एक शुरूआत मात्र थी। कांशीरामजी और उनके तत्कालीन सहयोगी चाहते थे, कि एम्प्लॉईज फेडरेशन'' का गठन किया गया। शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो, इस संगठन को राष्ट्रीय स्वरूप देने के लिये कांशीराम जी निकल पड़े। अनेक कर्मचारी संगठनों के कार्यकर्त्ताओं से वे मिलने लगे। बाबासाहब की एक बैठक बुलायी जिसमें सैकड़ों लोग शामिल हुये। इस बैठक में बामसेफ की ''पे बेक टू द सोसायटी'' की संकल्पना तैयार हुई। साथ ही साथ इसे नॉन पोलिटिकल, नॉन एजिटेशन और नॉन रिलीजियस बनाये रखने का संकल्प किया गया। यह भी तय किया गया कि जब सारे भारत में कम से कम दो लाख कर्मचारी इसमें शामिल होंगे, तब ही इसकी विधिवत स्थापना की जायेगी। दिल्ली की लेबर मिनिस्ट्री में सेक्शन ऑफिसर पद पर कार्यरत श्री दौलतराव बांगर के निवास में बामसेफ का अस्थायी कार्यालय खोला गया।

बामसेफ को अखिल भारतीय स्तर देने के लिये कांशीराम जी दिन रात परिश्रम करने लगे। इस कार्य में उन्हें महाराष्ट्र के कुछ साथियों का भरपूर सहयोग मिला। जिसकी उन्होंने समय–समय पर प्रंशसा की। वे हर प्रदेश के प्रत्येक जिलों में घूमते हुये कर्मचारियों तथा उनके स्थानीय स्तर के संगठनों से मिलते रहे। अभी कुछ वर्ष पूर्व जब एक पत्रकार ने उनसे पूछा था कि ''क्या आपने लगभग सारा भारत देख लिया है?'' तो कांशीराम जी ने मुस्कुराते हुये उत्तर दिया, ''लगभग, मैंने पूरा भारत देश घूम लिया है, और वह भी एक बार नहीं कई बार।''

9 मार्च, 1975 को कांशीराम जी नागपुर में विदर्भ विभागीय कार्यकर्त्ता सम्मेलन में शरीक हुये। उनके एक पुराने साथी गोविंदराव बनकर, पुरानी यादों को दोहराते हुये कहते हैं, ''साहब नागपुर में जब भी आते थे, तब मैं अपना स्कूटर लेकर उनके साथ होता था। सुबह से हमारी संपर्क यात्रा शुरू होती थी। साहब ने अधिकांश सफर रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे से ही किया है। भारी भीड़ में वे खड़े–खड़े ही आते थे।

श्री मनोहर आटे भी एक प्रसंग याद दिलाते हैं, ''साहब उन दिनों किराये की साईकिल पर घूमते थे। कभी–कभी तो साईकिल का किराया देने के लिये भी उनके पास पैसे नहीं होते थे। एक बार उन्होंने मुझे साईकिल का भाड़ा देने के लिये 2 रूपयों की मांग की, परंतु प्रसंग वश मेरे पास भी पैसे नहीं थे। मैंने उनसे कहा कि अभी तो मेरे पास सिर्फ पांच पैसे हैं, आप रूकिये मैं अभी पैसों का इंतजाम करता हूँ। इस पर साहब पल भर के लिये चुप रहे, फिर बोले–'आप वो पांच पैसे मुझे दे दो, रास्ते में साईकिल में हवा भरने के काम आयेंगे' और उन्होंने वे पांच पैसे रख लिये।''

कांशीराम जी स्वयं अपने बारे में कहतेहैं, ''साल के पूरे 365 दिन भी पूरे समय के लिये मैं व्यस्त रहता हूँ। इतने काम मेरे सामने पड़े हैं। मेरे पास तो बीमार होने के लिये भी समय नहीं है।'' और फिर अपना चिरपरिचित वाक्य दोहराते हैं, ''दिल में अगर सही तमन्ना है, तो रास्ते निकल आते हैं, तमन्ना अगर सही नहीं है तो हजारें बहाने निकल आते हैं।''

कांशीरामजी पांच वर्षों तक कर्मचारियों को संगठित करने में लगे रहे। सैकड़ों प्रशिक्षण कैम्प लेकर उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठन और समर्पण के लिये तैयार किया, और ठीक पांच वर्षो के बाद 6 दिसम्बर 1978 को दिल्ली में बामसेफ की विधिवत् स्थापना की तब तक इस संगठन में दो लाख से अधिक कर्मचारी शामिल हो चुके थे। जिनमें 500 पी.एच.डी., 3000 डाक्टर्स, 15000 वैज्ञानिक, 70000 पदवीधर कर्मचारी और अन्य कार्यकर्ता शामिल थे। बामसेफ का यह पहला सम्मेलन 7 से 10 दिसम्बर, 1978 तक चला, जिसमें अनेक विषयों पर विचार मंथन किया गया।

बामसेफ की निर्मित से ''पे बॅक टू द सोसायटी'' का दौर चल पड़ा था। दलित शोषित समाज की गैर–राजनीतिक जड़ों को मजबूत करने के लिये बामसेफ अब मैदान में आ चुकी थी। इस ब्रेन बैंक, मनी बैंक और टेलेंट बैंक कहा जाता था। अपनी बुद्धि, अपना पैसा, और अपनी मेहनत ये त्रि सूत्र बामसेफ की शक्ति बने।

बामसेफ के तत्वाधान में सर्वप्रथम 14 अप्रैल, 1979 से 14 जून, 1979 तक ''विल आम्बेडकरीज्म रिवाइज एण्ड सर्वाइव?'' (क्या आम्बेडकर चैतन्य और दीर्घजीवी होगा?) इस विषय पर देश के दस मुख्य शहरों में सेमीनार आयोजित किये गये। इस कदम से जहाँ देश भर के तथाकथित आम्बेडकरवादी बुद्धिजीवियों में खलबली मच गयी, वहाँ आम्बेडकरवादी नवयुवकों का एक विशाल वर्ग कांशीरामजी को अपना नेता मान कर उनके पीछे हो लिया, आम्बेडकरवादियों को खोया हुआ विश्वास जगाने में कांशीरामजी कामयाब हुये।

2 से 4 दिसम्बर, 1979 को नागपुर में बामसेफ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसमें देश भर में दस हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, इस अधिवेशन में जागृती जत्था, प्रदर्शनी, बामसेफ सहकारिता, बामसेफ भाईचारा और बामसेफ दत्तक केंद्र जनता के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बने। बामसेफ को एक 'मिशन' की संज्ञा दी गयी। इस अधिवेशन में कांशीरामजी ने कहा ''भारतीय लोकशाही कुछ और नहीं बल्कि अमीर लोगों के नोटों द्वारा गरीब लोगों के वोट हथियाना है। यह एक प्रकार की सक्रिय सामंतशाही है।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''हमारे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मोर्चों को मजबूती प्रदान करने के लिये हमें कुछ विद्यमान शक्तियों से सहयोग भी करना पड़ेगा जिससे हमें गतिशीलता प्राप्त हो सके। परंतु, इस प्रक्रिया में हमारा प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होना चाहिये।''

बामसेफ का दूसरा राष्ट्रीय अधिवेशन 20 से 24 नवम्बर, 1980 को दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अधिवेशन की स्थली रामलीला मैदान को 'डा. आम्बेडकर नगर' नाम दिया था। इसमें भारत के 22 राज्यों से आये प्रतिनिधियों ने बामसेफ की राज्यस्तरीय गतिविधियों द्वारा प्रेरणादायक समाचार सुनाया।

बामसेफ का तीसरा राष्ट्रीय अधिवेशन 14 से 18 अक्टूबर, 1981 तक चंडीगढ़ के परेड ग्राउंड में सम्पन्न हुआ। इसमें भारत के 300 जिलों में आये प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस अधिवेशन में 'बामसेफ वॉलेंटियर फोर्स' को पहली बार सामने लाया गया। यह इस अधिवेशन का मुख्य आकर्षण था।

यह ऐसा समय था जब बामसेफ के प्रबोधन एवं प्रशिक्षण द्वारा दलित शोषित समाज की उभरती शक्ति को, समय से पहले खत्म करने की साजिश पुणे से चल पड़ी थी। दलित पेंथर नामक एक क्रांतिकारी संगठन जो कि मूलतः ब्राह्मणवादी दिमाग की उपज था, दलित शोषित समाज के नवयुवकों के हाथ में थमा दिया गया था। जोश में भरा तरूण रक्त आंदोलन की मशाल लिये सड़कों पर उतर आया और सरकारी दमनचक्र का शिकार हुआ। महाराष्ट्र में मराठवाड़ा विद्यापीठ को डा. बाबा साहब आम्बेडकर का नाम देने के लिये नवयुवकों का 'लांग मार्च' भी नागपुर से निकल पड़ा। कांशीराम जी की इस आंदोलन के साथ हमदर्दी जरूर थी, परंतु इस अपरिपक्व आंदोलनकर्ताओं का उन्होंने कभी समर्थन नहीं किया। वे जानते थे कि वह ब्राह्मणवादी साजिश आम्बेडकरवादी आंदोलन को आत्मघात की राह पर मोड़ देगी। और वस्तुतः महाराष्ट्र इसका शिकार हुआ।

नौकरीपेशा कर्मचारियों की अपनी सीमायें थीं। और कांशीरामजी ने बामसेफ को नॉन पॉलिटिकल के साथ–साथ नॉन–ॲजिटेशनल भी बनाये रखा था। क्योंकि, वे चाहते थे, कि बामसेफ के विधायक परिश्रम का, दलित–शोषित समाज की गैरराजनीतिक जड़ों को मजबूत करने के लिये ही उपयोग हो। कर्मचारी स्वयं आंदोलनात्मक कार्यों ने ना उलझे, उसे दूसरों पर छोड़

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

दे। अतः 6 दिसम्बर 1981 को कांशीराम जी ने डी.एस. फोर नामक लड़ाकू संगठन की स्थापना की, उसका पूरा नाम दलित शोषित समाज संघर्ष समिति था।

डी.एस.फोर की स्थापना करके कांशीराम जी ने 'छोटे साधनों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल' शुरू करवा दिया। बामसेफ के कार्यों से प्रभावित विद्यार्थी, युवक और युवतियाँ बड़े पैमाने पर डी.एस.फोर की ओर आकर्षित हुये। सिर्फ दो माह के भीतर ही देश के अनेक हिस्सों में डी.एस.फोर की ओर आकर्षित हुये। सिर्फ दो माह के भीतर ही देश के अनेक हिस्सों में डी.एस.फोर के क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किये गये, जिनमें से छह महाराष्ट्र, तीन उत्तर प्रदेश और 1 छत्तीसगढ़ (मध्यप्रदेश) में सम्पन्न हुआ। 26, 27 फरवरी को दिल्ली के कान्स्टिटयूशन क्लब में देश भर से आये हजारों प्रतिनिधियों की उपस्थिति में कांशीरामजी ने डी.एस.फोर की विद्यार्थी, युवक, और युवतियों की स्वतंत्र इकाइयाँ स्थापित कीं।

18 अप्रैल 1982 को आगरा में बामसेफ और डी.एस. फोर की विशाल संयुक्त परिषद आयोजित की गयी जिसमें 50 हजार से भी अधिक प्रतिनिधि शामिल थे। इस महा आयोजन के बारे में अपने अंग्रेजी मासिक ''ऑप्रस्ट इंडियन' के अप्रैल 1982 के अग्रलेख में कांशीराम ने लिखा कि, ''इसी आगरा शहर में 19 मार्च 1956 को बाबासाहेब ने कहा– 'मेरे चारों ओर क्लर्कों की भीड़ इकट्ठा हुई है, जो सिर्फ अपना पेट भरने में व्यस्त हैं। मैं उनसे उम्मीद करता था कि, जिन लोगों के बीच वे पैदा हुये हैं, उनके उत्थान के लिये वे कार्य करेंगे, परंतु, मैं देख रहा हूँ कि वे खुद अपनी समस्यायें भी सुलझा नहीं पा रहे हैं, तो उनसे कैसी उम्मीद करें कि, वे अपने अभागे भाईयों की समस्याओं को सुलझा पायेंगे–बाबासाहब के इस कथन से प्रेरणा लेकर बामसेफ में सामाजिक दायित्व का अहसास तो बढ़ा है, परंतु अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

कांशीराम जी आगे लिखते हैं कि, ''बाबासाहब ने कहा था कि विगत 30 वर्षों से मैं आप लोगों के राजनैतिक अधिकारों के लिये लड़ रहा हूँ। मैंने राजनैतिक अधिकार पुनः प्राप्त कर लिये हैं, जो कि आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। मैंने संसद और विधायिकाओं में आप लोगों के लिये आरक्षण का प्रावधान कर दिया है। आपके बच्चों के लिये शैक्षणिक सहूलियतों का इंतजाम भी कर दिया है। आप लोग तरक्की की राह पर जा सकते हैं। अब यह आप लोगों का फर्ज कि, इस देश में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक गैर–बराबरी को नष्ट करने के लिये, एकजुट होकर संघर्ष करते रहें। इस उद्देश्य के लिये सभी प्रकार के बलिदानों, यहाँ तक कि, अपने प्राणों को भी न्यौछावर करने के लिये आप लोगों को तैयार रहना चाहिये–बाबासाहब के इस कथन को डी.एस.फोर के कार्यकर्ताओं को हमेशा स्मरण में रखना चाहिये।

कांशीरामजी कहते हैं कि, बाबासाहब के इन कथनों की याद दिलाने के लिये ही 18 अप्रैल, 1982 को बामसेफ ओर डी.एस.फोर. का संयुक्त सम्मेलन आगरा में आयोजित किया गया।

जून, 1982 में डी.एस.फोर ने हरियाणा चुनाव में हिस्सा लिया। ''लिमिटेड पोलिटिकल ॲक्शन'' के तहत यह कदम उठाया गया था। इसका उद्देश्य था –

1. हमें अपना चुनावी टिकट स्वयं बनाना होगा, और
2. हमारा एकसूत्रीय कार्यक्रम होगा दलित शोषित समाज की राष्ट्रीय स्तर की राजनैतिक पार्टी का निर्माण।

जिस गांधी आम्बेडकर समझौता बनाम 'पूना पैक्ट' की संक्षिप्त चर्चा हम शुरूआत में कर चुके हैं, उसे 1972 में पचास वर्ष पूरे होने जा रहे थे। 1932 के पश्चात स्वयं डा. बाबा साहब आम्बेडकर ने कई मौकों पर इस समझौते से दलित शोषित समाज की हुई हानियों को उजागर करके, इसकी तीव्र निंदा की थी। उसी 'पूना पैक्ट' के 'धिक्कार' कार्यक्रम का कांशीराम जी ने ऐलान किया। 24 सितम्बर, 1982 को पूना से शुरूआत करके 24 अक्टूबर, 1982 को जालंधर में इसका समापन किया। पूना, अहमदनगर, औरंगाबाद, अंबेजोगई, नांदेड, नागपुर, अकोला, अमरावती, यवतमाल, चंद्रपुर, कोरबा, रायपुर, जबलपुर, इंदौर, आगरा, अलीगढ़, मथुरा, चउमा, छारा, कोसीकलांन, भरतपुर, फरीदाबाद, गाजियाबाद, दिल्ली, भोपाल, झांसी और जालंधर आदि शहरों में 'पूना पैक्ट धिक्कार परिषदों' का सफल आयोजन किया गया, इस विराट आयोजन से दलित शोषित समाज में अपने खुद के बदौलत अपने पैरों पर खड़े होने की आकांक्षा जाग उठी। इन परिषदों ने उन बुर्जुआ आम्बेडकरवादियों की धज्जियाँ उड़ा दीं, जो गाँधी के आगे घुटने टेक चुके थे।

2 से 8 दिसम्बर, 1982 तक कांशीराम जी ने जापान के ओसाका शहर में 'विषमता के विरूद्ध जातिगत परिषद' में संसार भर के मानव अधिकार संगठनों के प्रतिनिधियों को भारतीय दलित–शोषितों की समस्याओं से अवगत कराया। इस कार्यक्रम का आयोजन जापान के बुराका लिबरेशन लीग ने किया था।

'लिमिटेड पोलिटकल ॲक्शन प्रोग्राम' के तहत डी. एस.फोर के बैनर पर दिल्ली का चुनाव भी लड़ा गया, जिस से कार्यकत्ताओं में अनुभव और आत्मविश्वास की वृद्धि हुई।

'पूना पैक्ट धिक्कार परिषदों के पश्चात् कांशीराम जी ने डी.एस.फोर को चार सूत्रीय कार्यक्रम दिया। पहला तात्कालिक (सामाजिक क्रिया) दूसरा अल्पकालीन (सीमित राजनैतिक क्रिया), तीसरा दीर्घकालीन (पूना राजनैतिक क्रिया) और चौथा स्थायी (सांस्कृतिक बदलाव एवं नियंत्रण) था।

सामाजिक कार्यवाही के अंतर्गत डी.एस.फोर का 'दो चक्के और दो पांव' आंदोलन 15 मार्च 1983 से शुरू हुआ। भारत के सभी शहरों, गावों और दूर दराज के देहातों में लगभग 40 दिनों तक 'साईकिल मार्च' चलता रहा। 3200 किलोमीटर की इस लम्बी यात्रा से आम्बेडकरवादी मिशन का प्रचार प्रसार जिस तेजी से हुआ, डी.एस.फोर. का नाम भी भारत के कोने कोने में गूंज उठा। 24 अप्रैल 1983 को इसका समापन हुआ।

इसके तुरंत बाद उत्तरप्रदेश में डी.एस.फोर. के माध्यम से राज्यवापी शराब बंदी आंदोलन चलाया गया, इसमें यू.पी. की महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। उत्तरप्रदेश तो जैसे डी.एस.फोर. का मायका बन बैठा।

6 दिसम्बर, 1983 से कन्याकुमारी, कारगिल, कोहिमा और पुरी में 'समता और आत्मसम्मान' का सामाजिक आंदोलन चलाया गया, जिसका समापन 15 मार्च, 1984 को दिल्ली के बोट क्लब मैदान पर किया गया। यह महाभियान भी अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

बामसेफ द्वारा चलाया गया 'पे बॅक टू द सोसायटी' आंदोलन और उसका प्रबोधन कार्य, कॅडर कॅम्प्स, तथा बुद्धि, श्रम और अर्थ स्त्रोत के निरंतर प्रवाह से गैर–राजनैतिक जड़ों को मजबूती प्राप्त हो रही थी और साथ ही साथ डी.एस.फोर. द्वारा चलाये गये जनजागरण अभियान और आंदोलनात्मक गतिविधियों तथा चुनावी राजनीति में प्रभावी उपस्थिति यह सब कुछ मिला कर इस देश के पचासी प्रतिशत दलित–शोषित समाज को बाबासाहब आम्बेडकर के कथन, 'जाओ और अपने घर की दीवारों पर लिख दो कि, हमें इस देश की शासनकर्ता जमात बनाना है' की याद दिलाता रहा, दलित शोषित समाज की आँखे अब खुलने लगी थीं। वे इस सच्चाई को समझने लगे थे, जो बाबासाहब ने कही थीं कि ''राजनैतिक सत्ता वह गुरूकिल्ली है जिसे हासिल करने से कोई भी ताला खोला जा सकता है।'' परंतु इस सच्चाई को हकीकत में बदलने के लिये किसी ऐसे राजनैतिक दल की आवश्यकता थी जो वास्तव में उनका अपना हो।

कांशीरामजी इस वास्तविकता को समझते थे। लड़ाई का स्वरूप और समय के अनुसार हथियारों का बदलना भी वे जानते थे। डी. एस.फोर. की सीमित राजनैतिक कार्रवाई से प्राप्त अनुकूल परिणामों से वे प्रसन्न थे। दलित–शोषित समाज भी अब उन्हें सिर्फ 'साहब' या 'मान्यवर' संबोधित करने लगा था और कांशीराम जी, जिसे अब 'बहुजन समाज' कहने लगे थे, वह भारतवर्ष का पचासी फीसदी दलित शोषित–उपेक्षित समाज अपने किसी राजनैतिक दल को स्वीकार करने के लिये तैयार था। इन संकेतों को समझ कर 14 अप्रैल को, डा. बाबासाहब आम्बेडकर के जन्मदिवस के अवसर पर, दिल्ली के बोट क्लब मैदान में, मान्यवर कांशीराम जी ने 'बहुजन समाज पार्टी' की स्थापना का ऐलान कर दिया।

इसके साथ ही, 30 मार्च को नागपुर से 'बहुजन टाईम्स' नामक मराठी दैनिक अखबार और 14 अप्रैल, 84 को दिल्ली से एक अंग्रेजी और एक हिन्दी दैनिक अखबार 'बहुजन टाईम्स' प्रकाशित किये गये।

बहुजन समाज पार्टी का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली के लालकिला मैदान पर 22 से 24 जून, 1984 तक आयोजित किया गया। सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक मुक्ति का नारा इसी क्षण से बुलंद किया गया।

डा. बाबासाहब आम्बेडकर ने न सिर्फ दलित समाज के उत्थान पर मार्ग संवैधानिक सहूलियतों के माध्यम से प्रशस्त कर दिया था, बल्कि हिंदू वर्ण–व्यवस्था के बहुसंख्यक शोषित, शूद्र समाज, जिसे अन्य पिछड़ा वर्ग कहा जाता है, के लिये भी भारतीय संविधान की धारा 340 के द्वारा भविष्य के रास्ते खोल दिये थे। इस धारा के तहत राष्ट्रपति का यह दायित्व सौंपा गया था, कि इन वर्गों की पहचान और उनकी कठिनाइयों को दूर करने की सिफारिश करने हेतु एक आयोग का निर्माण करें। ताकि, सरकार इन पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए आवश्यक कदम उठा सकें। इसी संवैधानिक प्रावधान के तहत 1953 में काका कालेलकर आयोग गठित किया गया, जिसकी सिफारिशों को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 1955 में अस्वीकार कर दिया। 1978 में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के शासनकाल में फिर से एक नया आयोग गठित किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री.बी.पी. मंडल थे। यही वह बहुचर्चित मंडल आयोग है, जिसकी रिपोर्ट से देश भर में बवाल हो गया। मंडल आयोग ने पिछड़े वर्गों की 3743 जातियों की पहचान कर के, उन्हें सामाजिक और शैक्षणिक आधार पर आरक्षण देने की वकालत की। इन जातियों की कुल जनसंख्या इस देश की जनसंख्या का 52 प्रतिशत है। बहुसंख्यक होते हुये भी हजारों जाति उपजातियों में बिखराव होने के कारण यह समाज कुछ कर पाने में असमर्थ था। कांशीराम ने इस पिछड़े वर्ग के लिये लड़ने का मन बनाया।

बहुजन समाज पार्टी ने ''मंडल आयोग लागू करो वरना कुर्सी खाली करो'' का नारा देकर, सारे भारत को झकझोर डाला। इस आंदोलन के तहत 1 अगस्त, 1984 से 14 अगस्त 1984 तक, दिल्ली के बोट क्लब मैदान पर, जेल भरो आंदोलन किया गया, जिस में हजारों बसपा कार्यकर्त्ताओं ने जिन में महिलायें भी थीं, गिरफ्तारी दी। ऐसे ही अनेक प्रदर्शन और आंदोलन देश के अन्य राज्य और जिला मुख्यालयों में किये गये। 'मंडल आयोग' के लिये यह सबसे पहला आंदोलन था।

इसके तुरंत बाद 15 अगस्त 1984 से देश के पांच कोनों से 'आखिल भारतीय राजनैतिक कार्यवाही–गुलामी के विरूद्ध संघर्ष' आंदोलन चलाया गया, जिसका उद्देश्य बहुजन समाज, विशेषतः अन्य पिछड़े वर्गों को, समझना था कि आजादी के 37 वर्षों के बाद भी वे गुलाम क्यों हैं?

इसी वर्ष 13 नवम्बर, 1984 को लोकसभा चुनाव घोषित हुए। बसपा को स्थापित हुये सिर्फ सात माह हुये थे, फिर भी, बसपा ने नौ राज्यों और तीन केंद्र शासित प्रदेशों में अपने उम्मीदवार खड़े किये। इस चुनाव में बसपा को दस लाख से भी अधिक वोट प्राप्त हुये, जिसमें से अकेले उत्तरप्रदेश का हिस्सा 6 लाख के आसपास था, और पंजाब से 2 लाख से कुछ अधिक मत मिले थे, 1984 के ही पंजाब और उत्तरप्रदेश के विधानसभा चुनावों में बसपा ने शिरकत की और केवल दो माह के भीतर ही उत्तरप्रदेश में बसपा के वोटों में 3 लाख की बढ़ोत्तरी हुई।

18 अगस्त, 1984 से 31 दिसम्बर, 1984 तक बहुजन समाज पार्टी ने 'आरक्षण हिस्सेदारी का सवाल' इस विषय पर देश भर में पांच विशाल सेमीनार और पांच सौ संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। यह आंदोलन मंडल आयोग लागू करवाने के लिये बहुजन समाज में जागृति पैदा करने के लिये किया गया।

5 अक्टूबर 1986 को नागपुर में मंडल आयोग एवं आरक्षण परिषद् आयोजित की गयी।

मार्च, 1987 में हरिद्वार में हुये सांसदीय उपचुनाव में बसपा काफी मजबूती से लड़ी थी। इस चुनाव से कांशीराम जी की शिष्या और तरूण महिला नेत्री सुश्री मायावती जी को सारा भारत पहचानने लगा। मायावती जी को 1,35,311 वोट मिले थे। वे दूसरे नंबर पर थीं जब

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

कि जनता दल के दिग्गज नेता श्री रामविलास पासवान मात्र 35, 225 वोट लेकर चौथे स्थान पर थे। उनकी जमानत जब्त हो चुकी थी, जबकि कांग्रेस के विजयी उम्मीदवार को मायावती जी से मात्र चौदह हजार वोट अधिक प्राप्त हुये थे।

15 अगस्त, 1987 से 15 अगस्त 1988 तक कांशीराम जी ने देशभर में अस्पृश्यता, अमानवीयता, अन्याय, असुरक्षितता और असमानता, इन पांच सूत्रों के विरोध में, आंदोलन एवं वोट क्लब दिल्ली में धरना आयोजित किया, जिसके तहत देशभर में 'भाई चारा बनाओ' अभियान चलाया गया।

1989 के चुनाव में बसपा उत्तरप्रदेश में 'बॅलेन्सिंग पावर' के रूप में नजर आयी। प्रदेश में लोकसभा की दो और विधानसभा की 23 सीटों पर कब्जा करके उसने तमाम राजनैतिक पार्टियों को चौंका दिया। इसी वर्ष पंजाब से बसपा ने लोकसभा की भी एक सीट जीती। बसपा को उत्तरप्रदेश और पंजाब में राज्यस्तीय मान्यता प्राप्त हुई।

6 दिसम्बर, 1990 से 14 अप्रैल 1991 तक मा. कांशीराम जी ने सुदूर दक्षिण भारत के कन्याकुमारी से 'सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक मुक्ति' के आंदोलन की शुरूआत की। यह डा. बाबासाहब आम्बेडकर की जन्मशताब्दी का वर्ष था। भारत के 13 प्रमुख और बड़े राज्यों में शहरों से लेकर गावों और सुदूर देहातों तक, डा. बाबासाहब आम्बेडकर की विचारधारा का प्रचार प्रसार किया गया। मंडल आयोग लागू करवाने के लिए पिछड़े वर्गों में जागृति लाना भी इस कार्यक्रम में शामिल था। 'सामाजिक परिवर्तन रथ' के साथ करीब 50 हजार किलोमीटर लम्बी यात्रा, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़ आदि राज्यों का दौरा करती हुई 24 मार्च, 1991 को मान्यवर कांशीराम जी के जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली के वोट क्लब पर विराट सभा में परिवर्तित हुई, जिसमें बहुजन समाज ने लाखों की तादाद में उपस्थिति दर्शायी।

130 दिनों तक यह यात्रा चलती रही और मान्यवर कांशीराम जी प्रतिदिन औसतन 20 सभाओं को संबोधित करते थे। 24 अप्रैल 1991 को इस महायात्रा का समापन डा. बाबासाहब आम्बेडकर की जन्मभूमि महू (मध्यप्रदेश) में किया गया।

इस यात्रा की विशेष घटना यह भी थी कि, जब पंजाब में यह यात्रा पहुंची, तब कांशीराम जी को कई वर्षों बाद अपने पैतृक गांव जाने का अवसर मिला, उन्होंने अपनी माताजी से भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

1991 के उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनावों में बसपा को 12 स्थानों पर विजय प्राप्त हुई, और 137 स्थानों पर प्रत्याशी दूसरे और तीसरे नंबर पर रहे। हरियाणा से 1 प्रत्याशी की विजय हुई।

नवम्बर, 1992 को, उत्तरप्रदेश में हुये लोकसभा के तीन उपचुनावों में से एक बसपा अध्यक्ष मान्यवर कांशीराम जी स्वयं पहली बार इटावा से चुनाव जीत गये। यह जीत बसपा के आठ वर्ष के राजनैतिक जीवनकाल में मील का पत्थर साबित हुई। इससे बहुजन समाज के आत्मबल में वृद्धि हुई। इसी चुनाव और बसपा अध्यक्ष मान्यवर कांशीरामजी नजदीक आये।

1993 में मध्यप्रदेश विधानसभा चुनावों में बसपा ने 11 सीटों पर जीत दर्ज की, जो कि विगत वर्षों की तुलना में 6 गुना अधिक थी। 55 अन्य सीटों पर बसपा दूसरे और तीसरे स्थान पर रही। उसे कुल 16.5 लाख नोट मिले, इस तरह उत्तरप्रदेश और पंजाब के बाद मध्यप्रदेश में भी बहुजन समाज पार्टी को राज्यस्तीय मान्यता मिली।

1993 का उत्तरप्रदेश विधानसभा का चुनाव सपा और बसपा ने मिलजुल कर लड़ा। सपा बसपा गठजोड़ को कुल 173 सीटें प्राप्त हुई जिसमें 101 सपा की और 67 बसपा की थी। इस चुनाव में, राज्य में चौथे नम्बर पर जा चुकी कांग्रेस को, मजबूर होकर सपा-बसपा गठजोड़ को सरकार बनाने के लिये समर्थन देना पड़ा। मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री बने और बसपा के ग्यारह विधायकों को मंत्री बनने का अवसर मिला।

स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह पहला मौंका था जब दलित शोषित समाज के लोग ना सिर्फ अपना राजनैतिक दल बना कर अपने बलबूते पर चुन कर आये, बल्कि मंत्री भी बने। कांशीरामजी ने वह कर दिखाया, जिसकी कल्पना महत्मा, फुले, छत्रपति शाहू, पेरियर रामास्वामी और डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने की थी।

6 दिसम्बर, 1993 को डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर मान्यवर कांशीराम जी ने अखिल भारतीय स्तर पर 'जाति तोड़ो समाज जोड़ो' आंदोलन का शंखनाद किया। इस प्रोग्राम के तहत मुम्बई, हैदराबाद, पटना, कलकत्ता और अहमदाबाद जैसे बड़े शहरों में विराट रैलियाँ आयोजित की गयीं और स्थानिक स्तर पर भी देश भर में अनेक सभायें सम्पन्न हुईं।

बहुजन समाज पार्टी एक राजनैतिक दल ही नहीं बल्कि बहुजनों के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का आंदोलन भी है। छुट पुट के राजनैतिक लाभ के लिए बसपा अपने ध्येय और अपने आंदोलन के साथ समझौता नहीं कर सकती, इस वास्तविकता का परिचय 1995 के जून माह में हुआ, जब सपा नेता मुलायम सिंह यादव ने अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षा के चलते बसपा को कमजोर करने की कोशिश की, तो बहुजन समाज पार्टी ने मुलायम सिंह यादव ने अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षा के चलते बसपा को कमजोर करने की कोशिश की, तो बहुजन समाज पार्टी ने मुलायमसिंह का साथ छोड़ दिया। सरकार गिर गयी। उत्तर प्रदेश में राजनैतिक संकट निर्माण हुआ। मुलायमसिंह यादव की सामंतवादी राजनीति से सभी राजनैतिक दल त्रस्त थे, परंतु भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस परस्पर सहयोग के लिये तैयार नहीं हुये। ऐसे में, भाजपा, जो कि अब तक उत्तरप्रदेश में सबसे बड़ा राजनैतिक दल था, बहुजन समाजपार्टी को सरकार बनाने के लिये बिना शर्त समर्थन देने को तैयार हुई।

भाजपा, जो कि कट्टरपंथी ब्राह्मणवादियों का दल है, जब बसपा को समर्थन देने के लिये राजी हुआ, तो यह बात किसी चमत्कार के कम नहीं थी। जिन लोगों ने आज तक दलित-शोषित बहुजनों के वोटों को लूट कर अपनी सरकारें बनायी थी और पिछड़ों को अपने पांवों तले दबाये रखा था, आज वे लोग बहुजन समाज की पार्टी को सरकार बनाने में मदद करें? मगर ऐसा हुआ। और 16 जून, 1995 में देश के सबसे बड़े प्रांत उत्तरप्रदेश में पहली बार दलित-शोषित बहुजन समाज की सरकार बनी। सुश्री मायावती जी, एक दलित महिला, पहली बार मनुवादियों के गढ़ में मुख्यमंत्री बनीं। सपा को छोड़ कांग्रेस सहित अन्य सभी दलों ने बसपा का समर्थन किया। इस प्रकार विरोधियों का समर्थन लेकर सरकार बनाने में मां कांशीराम जी की आलोचना भी हुयी। उन्हें अवसरवादी भी कहा गया, परंतु यह फौलादी पुरूष जरा भी विचलित नहीं हुआ। कांशीराम जी के दिशा निर्देशन में मायावती जी बहुजनोद्धारक कार्यों में जुट गयीं। सर्वप्रथम 25-26 जुलाई 1995 में उन्होंने लखनऊ में विशाल 'शाहू मेला' आयोजित किया। अपने समर्थन की कीमत मांगते हुये भाजपा ने मथुरा में विश्व हिंदू परिषद द्वारा यज्ञ आयोजित करवाने की कोशिश की, जिसे मुख्यमंत्री मायावती जी ने मंजूरी नहीं दी। कानपुर विश्वविद्यालय का 'श्री छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर' नामकरण कर दिया। आगरा विश्वविद्यालय को 'डा. बाबासाहब आम्बेडकर, विद्यापीठ' नामकरण से नवाजा। 26 दिसम्बर 1995 को लखनऊ में 'पेरियार मेला' आयोजित किया।

दलित शोषित समाज जहाँ बहुसंख्या में था, ऐसे गांवों में, स्कूल, अस्पताल, जल, सड़क, पक्के रास्ते, बिजली इत्यादि अत्यावश्यक सुविधाओं को उपलब्ध करवाने के लिये हजारों करोड़ रूपयों की योजना को तेजी से कार्यान्वित किया। इसे 'आम्बेडकर ग्राम विकास योजना' कहते हैं।

आम्बेडकर नगर और ऊधमसिंह नामक दो नये जनपदों का निर्माण किया, जिनका घोषणा पत्र 29 सितम्बर 1995 को जारी किया गया।

1.43 लाख शातिर अपराधियों को गिरफ्तार करके कानून और व्यवस्था को मजबूत कर भ्रष्ट एवं पक्षपाती उच्चाधिकारियों को निलंबित किया।

शासन और प्रशासन पर मायावती की मजबूत पकड़ और बहुजनोद्धारक कार्यशैली से भाजपा का नाराज होना अस्वाभाविक नहीं था। परंतु, मायावती जी ने भाजपा की नाराजी की परवाह नहीं की और तेज गति से कार्य करने लगीं। 17 अक्टूबर, 1995 को सिर्फ चार माह पूर्ण होते ही भाजपा ने समर्थन वापस ले लिया। परंतु, इन चार महीनों में मायावती ने यह कार्य कर दिखाया जिसकी उम्मीद किसी ने नहीं की थी।

अब कांशीरामजी का कार्य और भी द्रुत गति से बढ़ गया।

1996 के लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी से तीन, उत्तरप्रदेश से छह और मध्यप्रदेश से दो, कुल मिलाकर ग्यारह सांसद चुन कर आये। उत्तरप्रदेश में विधानसभा का चुनाव हुआ, जिसमें बहुजन समाज पार्टी के 67 उम्मीदवार विजयी हुये। इसके साथ ही कश्मीर विधानसभा चुनाव में बसपा के चार प्रत्याशी जीत गये। वह बहुजन समाज को कश्मीर सहित चार राज्यों में राजनैतिक दल की मान्यता प्राप्त हो गयी थी। बहुजन समाज पार्टी इस देश की सात राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों में गिनी गयी। इसे राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई।

उत्तर प्रदेश में 17 अक्टूबर, 1995 से राष्ट्रपति शासन लागू हो गया था। मायावती जी मुख्यमंत्री बनने से पूर्व 2 जून, 95 को लखनऊ के सरकारी गेस्ट हाउस पर, मुलायमसिंह यादव के इशारे पर, बसपा विधायकों को अगुवा किया गया, जिसकी जांच के लिये रमेशचंद्र आयोग बैठाया गया था। इस आयोग की रपट आ चुकी थी, जिसमें मुलायमसिंह यादव को पूर्णतः दोषी पाया जाता था।

1996 में भारत की राजनैतिक स्थिति तेजी से बदली। उत्तरप्रदेश में विधानसभा चुनाव के लिये कांग्रेस ने बहुजन समाज पार्टी के साथ गठजोड़ किया। जिसमें, उत्तरप्रदेश की 425 विधानसभा सीटों में सिर्फ 125 पर कांग्रेस और 300 पर बसपा अपने उम्मीदवार लड़ायेगी ऐसा तय हुआ। तत्कालीन पंतप्रधान एवं कांग्रेसाध्यक्ष नरसिंहराव और बसपा अध्यक्ष कांशीरामजी की संयुक्त पत्रकार परिषद, 24 जून, 1996 को दूरदर्शन सहित सभी प्रसार माध्यमों ने भारत भर में प्रसारित की। इस संबंध में मान्यवर कांशीरामजी कहते हैं कि ''ऐसा ही एक समझौता 1971 में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया और कांग्रेस पार्टी के बीच हुआ था जिसमें लोकसभा की 521 सीटों में से, 420 पर कांग्रेस लड़ेगी और सिर्फ 1 सीट पर आर.पी.आई. लड़ेगी ऐसा तय हुआ था। गांधी के बच्चों को 420 और बाबा के बच्चों को सिर्फ 1 सीट, यह जो नाइन्साफी 1971 में हुई थी, आज 1993 में मैंने उसका बदला ले लिया है, कांग्रेस को मैंने कम से कम उत्तरप्रदेश में इस हालत में लाकर खड़ा कर दिया है, वो हमारी मर्जी के बिना वहां पर जिंदा नहीं रह सकती। दूसरी विशेष बात यह हुई कि केंद्र में कांग्रेस सरकार हार चुकी थी और उसकी जगह पर संयुक्त मोर्चा सरकार ने प्रधानमंत्री देवेगौडा की अगुवाई वाली सरकार की स्थापना की। जिसमें मुलायमसिंह यादव को केंद्रीय रक्षामंत्री बनाया गया। कांग्रेस ने अपनी पराजय के बावजूद राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को समर्थन दे दिया था। संख्याबल के हिसाब से केंद्र में भाजपा प्रथम, कांग्रेस दूसरे और राष्ट्रीय मोर्चा तीसरे नम्बर पर थी। फिर भी भाजपा को रोकने के लिये, कांग्रेस ने राष्ट्रीय मोर्चा को सरकार बनवाने में सहयोग दिया।

17 सितम्बर, 1996 को लखनऊ के बेगम हजरत महल पार्क में बसपा की विशाल सभा में मुस्लिम समुदाय के नेता, दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम ने मुस्लिम समाज को बहुजन समाज पार्टी के पक्ष में मतदान करने की अपील की।

बसपा-कांग्रेस-मुस्लिम समाज का यह गठबंधन अपेक्षित परिणाम नहीं ला पाया, परंतु मा. कांशीरामजी की राजनैतिक सूझबूझ ने भारत की राजनीति के पंडितों को चकित कर दिया।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

1996 के उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनावों में वही नतीजा आया जो 1995 के पूर्व था। कांग्रेस को थोड़ा लाभ जरूर हुआ किंतु, कांग्रेस अपने वोटों को बसपा के पक्ष में नहीं डलवा सकी। उत्तरप्रदेश में फिर से राजनैतिक संकट निर्माण हुआ। भाजपा सबसे बड़ा दल जरूर थी, परंतु स्पष्ट बहुमत के काफी दूर थी। मुलायम सिंह यादव की सपा दूसरे नम्बर पर थी, बसपा तीसरे और कांग्रेस चौथे क्रमांक पर थी। वामपंथी और जद का लगभग सफाया हो गया था।

उत्तरप्रदेश में सरकार बनवाना असंभव सा था। कांशीराम जी चाहते थे कि, जिस तरह कांग्रेस के बाहरी समर्थन से राष्ट्रीय मोर्चा सरकार दिल्ली में बन पायी है और जिसमें मुलायमसिंह यादव रक्षामंत्री हैं, उसी तरह राष्ट्रीय मोर्चा भी उत्तरप्रदेश में सरकार बनवाने के लिये बसपा को समर्थन देने के लिये मुलायमसिंह यादव को मनाये। इस कार्य के लिये राष्ट्रीय मोर्चा पर दबाव लाने की जिम्मेदारी कांग्रेस की थी। परंतु मुलायमसिंह यादव के अड़ियल रवैये के कारण यह संभव नहीं हो पाया। कांग्रेस भी मजबूर दिखाई दी।

उत्तरप्रदेश की जनता अपनी निर्वाचित सरकार बनवाने की बाट जोह रही थी। राजनैतिक डेडलॉक निर्माण हो चुका था। सभी दल अपनी-अपनी रणनीति बना रहे थे। ऐसे में, फिर एक बार जून, 1995 की वापसी हुयी। परंतु इस बार भाजपा और बसपा में लिखित समझौता हुआ कि दोनों दल संयुक्त रूप से सरकार चलायेंगे, पहले छह माह की अवधि के लिये बसपा की सुश्री मायावतीजी मुख्यमंत्री होंगी और बाद में छह माह के लिये भाजपा का मुख्यमंत्री होगा। इस तरह फिर 20 मार्च, 1997 को बसपा-भाजपा ने संयुक्त रूप से सरकार बनवाने के लिये राज्यपाल रोमेश भंडारी को अपना दावा पेश किया। एक बार फिर देश की जनता ने देखा कि कांशीराम जी ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में राजनीतिक चातुर्य का परिचय दिया।

बसपा की गठबंधन सरकार बनते ही मुख्यमंत्री मायावती ने जिस तेजी से कार्य शुरू किया, उसकी मिसाल ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगी। वे दूसरी बार मुख्यमंत्री बनी थीं। अपने पहले के कार्यकाल में अधूरे रह गये कार्यों को पूरा करने का मौका उन्हें अब प्राप्त हुआ। वे अक्सर कहा करतीं कि, मुझे छः साल का काम सिर्फ 6 महीनों में पूरा करना है।

कांशीरामजी की देखरेख में मुख्यमंत्री मायावती के शासनकाल के इन छह महीनों में 8 नये जिलों का सृजन हुआ, जिनमें ज्योतिबा फुले नगर, कौशाम्बी, महामाया नगर, छत्रपति शाहू महाराज नगर, गौतमबुद्ध नगर, चन्दौली, श्रावस्ती और बलरामपुर का समावेश है।

आम्बेडकर ग्राम विकास योजना के तहत 11,524 गांवों में रोड, बिजली, शौचालय, पेयजल, औषाधालय, लायब्रेरी, स्कूल आदि बनाये गये, जिनका लाभ 12 लाख अनु-जाति और जनजाति के लोगों को मिला। दलित विद्यार्थियों की स्कॉलरशीप बढ़ाई गयी। 100 करोड़ की लागत की महत्वाकांक्षी ''डा. बाबासाहब आम्बेडकर उद्यान और स्थल'' का भव्य निर्माण, कानपुर में गौतमबुद्ध पार्क, गाजियाबाद में महामाया स्टेडियम, लखनऊ में परिवर्तन चौक का निर्माण, भागीदारी भवन, लाखों भूमिहीनों को जमीन का कब्जा, दलित ऐक्ट का क्रियान्वयन, और कानून और व्यवस्था की बहाली के लिये करीब 1 लाख असामाजिक तत्वों को कैद, किसान, बेघर, वृद्ध और विधवाओं को पेंशन, आदि अनेक उल्लेखनीय कार्य पूरे किये गये।

इसी काल में, मान्यवर कांशीरामजी ने 15 अगस्त 97 से अखिल भारतीय स्तर पर ''असली आजादी का संघर्ष'' आंदोलन प्रारंभ किया। इस कार्यक्रम के तहत देश भर में ''स्वतंत्र भारत में बहुजन समाज आश्रित क्यों'' विषय पर संगोष्ठियां और सेमीनार आयोजित किये गये। देश के सभी राज्यों में 'जीप मार्च' आयोजित किया गया, जिसका समापन 15 सितम्बर, 1997 को दिल्ली के लाल किला मैदान पर किया गया, दिल्ली की यह रैली 'एक महाविराट रैली' थी, जिसमें दस लाख से भी अधिक की संख्या में बहुजन समाज उपस्थित था।

मुख्यमंत्री मायावती का छह माह का कार्यकाल पूरा होते ही, उन्होंने 20 सितम्बर, 97 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया, और 21 सितम्बर, 97 को भाजपा के कल्याणसिंह मुख्यमंत्री बने। समझौते की शर्त का बसपा ने पालन किया। परंतु भाजपा को इससे समाधान नहीं मिला। बसपा विधायकों को खरीद कर अपनी पूर्ण सरकार बनवाने का षड्यंत्र भाजपा ने शुरू किया। सुश्री मायावतीजी के कार्यकाल में दलित-शोषित समाज के सामाजिक और आर्थिक उत्थान की दिशा में हुये कार्यों से भाजपा वैसे भी आतंकित थी। बसपा का जनाधार काफी बढ़ चुका था। भाजपा ने बसपा के प्रभाव को कम करने के लिये मायावतीजी द्वारा चलाये गये अभियान को रोकना शुरू कर दिया। दलित उत्पीड़न कानून पर रोक लगी। दलितों पर अत्याचार का सिलसिला शुरू हो गया। बाबासाहब आम्बेडकर की प्रतिमाओं का अपमान किया गया। बलात्कार और हत्यायें शुरू हो गयीं। और बसपा विधायकों को आर्थिक प्रलोभन दे कर, बसपा को तोड़ने की कोशिश की गयी। शाहूजी महाराज नगर जिले का नाम फिर से बदलकर चित्रकूट धाम रखा गया।

अपने आदर्शों का अपमान कांशीराम जी कैसे बर्दाशत करते। सिर्फ सत्ता में बने रहने के लिये अपने ध्येय और उसूलों का गला घोंटना बाबासाहब ने नहीं सिखाया था। और अंततः 19 अक्टूबर, 1997 को मायावती ने कलयाणसिंह सरकार को दिया समर्थन वापस ले लिया। कांग्रेस पार्टी के बहुसंख्य विधायकों और बसपा के कुछ बिकाऊ विधायकों को मंत्रीपद की भीख देखकर भाजपा ने अपने पक्ष में कर लिया और कल्याणसिंह की सरकार बच गयी।

कांशीरामजी ने, न बिकने वाला समाज, एक सशक्त, आत्मनिर्भर और अपने बलबूते पर अपने पैरों पर खड़ा होने वाला समाज निर्माण करने के लिये, जातिविहीन समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए अपना जीवन दांव पर लगाया था। परंतु यदि इस समाज में बिकने वाला जीव अपनी कीमत मांगने के लिये बाजार में खड़ा होगा, तो उसे कोई मसीहा भी नहीं बचा पायेगा। दलित-शोषित समाज की यही त्रासदी है।

25 नवम्बर, 1997 को भारतीय चुनाव आयोग ने बहुजन पार्टी को अधिकृत तौर पर राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दे दिया। कांग्रेस, माकपा के बाद बसपा चौथे नम्बर की नैशनल पार्टी है। भारत के 85 प्रतिशत दलित-शोषित बहुजन समाज की अपनी पार्टी है। अपने निर्माण के सिर्फ 13 वर्षों में राष्ट्रीय दर्जा हासिल करने वाली एकमात्र पार्टी है।

1997 के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय मोर्चा की केंद्र सरकार अपने अंतर्कलहों के चलते धाराशाही हुई। फरवरी, 1998 में फिर से लोकसभा चुनाव हुये। मा. कांशीरामजी देशभर में घूमते हुये, बड़ी-बड़ी विशाल रैलियों का आयोजन करवा कर बहुजन समाज को चेताने लगे। इस चुनाव में ''कांग्रेस भ्रष्ट और भाजपा महाभ्रष्ट लोगों की पार्टी'' है इस ओर बहुजन समाज का ध्यान दिलाया। स्थानिक स्तर पर छोटी मोटी पार्टियों से, जैसे हरियाणा में लोकदल आदि से चुनावी तालमेल भी किया। परंतु कांग्रेस या अन्य किसी बड़े राजनैतिक दल से तालमेल किये बिना इस बार भी बसपा लगभग अपने बलबूते पर लड़ी। उत्तरप्रदेश से चार तथा हरियाणा से एक ऐसे कुल पांच सांसद निर्वाचित हुये। पिछली लोकसभा की तुलना में इस बार बसपा को छह सीटों का नुकसान अवश्य हुआ, परंतु उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब, बिहार, हरियाणा और राजस्थान में बसपा के वोटों में पहले से भी काफी अधिक वृद्धि हुई।

1996 में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब और हरियाणा में जिन सीटों पर बसपा को कुल मिलाकर, 1 करोड़ 19 लाख 73 हजार वोट मिले थे, 1998 में उन्हीं सीटों पर कुल मिलाकर, 1 करोड़ 49 लाख 4 हजार अधिक वोट मिले, अर्थात 29 लाख 32 हजार अतिरिक्त वोट इस प्रकार हासिल हुये। यह बसपा के विलक्षण प्रगति का एक उदाहरण था।

1998 में मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली और मिजोरम इन चार प्रदेशों में, विधानसभा चुनाव सम्पन्न हुये। व्यापारियों और धनपतियों के बल पर 1998 के शुरूआत में चुनाव जीत कर और सत्रह राजनैतिक पार्टियों से गठजोड़ करके केंद्र में स्थापित भाजपा गठजोड़ सरकार ने सिर्फ अपने कार्यकाल के 6 महीनों में ही गरीबों का जीना दूभर कर दिया। आलू और प्याज, जो कि गरीब जनता के दैनंदिन आहार का मुख्य हिस्सा है, उनकी कीमतें आसमान छूने लगीं। भाजपा विरोधी लहर का महौल सारे देश में चल पड़ा। इधर, कांग्रेस पार्टी ने गांधी-नेहरू घरानेशाही का पुराना कार्ड फिर से श्रीमती सोनिया गांधी के नाम से, चलवा दिया। ऐसे माहौल में, मिजोरम को छोड़ अन्य तीन प्रांत मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली विधानसभा चुनावों में बसपा ने भी बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। इस चुनाव में मां. कांशीरामजी ने महँगायी और भ्रष्टाचार को प्रमुख मुद्दा बनाया। मध्यप्रदेश में कांग्रेस के साथ कूटनीतिक तालमेल भी हुआ। अत्यंत प्रतिकूल स्थिति में मध्यप्रदेश में बसपा अपने विधायकों की तादाद और जनाधार रखने में सफल हुई। मध्यप्रदेश से फिर से 11 विधायक चुन कर आये। राजस्थान में पहली बार बसपा का खाता खुला, यहाँ पर दो विधायक चुन कर आये। दिल्ली और राजस्थान जहां पर भाजपा की सरकारें थीं, अब कांग्रेस के हाथों चली गयी। इस चुनाव में, भाजपा को दो सरकारें गँवानी पड़ीं, और वामपंथियों सहित अन्य दलों का लगभग सफाया हो गया। कांग्रेस और भाजपा के पश्चात बसपा आज भारत में तीसरी शक्ति के रूप में स्थापित हुई है।

कांशीरामजी ने भारतीय राजनीति को उथलपुथल कर डाला है। उन्होंने मनुवादी पार्टियों, जो कि सत्ता की गेंद को आपस में ही खेला करती थीं, पर लगाम लगायी है।

बहुजन समाज को राजनैतिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिये वे प्रस्थापित मनुवादी पार्टियों पर अपना दबाव बनाये हुये हैं। उन्हें ''अनप्रेडिक्अेबल'' अर्थात 'जिनके बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना असंभव है, कहा जाता है। सत्ता के गलियारों में उन्हें 'अपॉचुनिस्ट' या 'अवसरवादी' कहा जाता है। इस विशेषण को कांशीराम जी ने बिना झिझक के स्वीकार कर लिया। वे कहते हैं ''हां, मैं सबसे बड़ा अवसरवादी हूँ, बहुजन समाज को राजकीय सत्ता दिलवाने के लिये मैं हमेशा अवसर की ताक में रहता हूँ। अवसर ना मिले तो पैदा करता हूँ, क्योंकि, इस देश के 85 प्रतिशत दलित-शोषित बहुजन समाज को इस देश का हुक्मरान बनाना ही मेरा एकमात्र मकसद है।''

काश! आज फुले, शाहू, पेरियार आम्बेडकर जीवित होते, तो देखते कि, उनके एक सपूत ने उनके सपनों को साकार करने के लिये, अपना जीवन दांव पर लगा दिया है। बहुजन समाज के लोगों ने पिछले कुछ वर्षों से मान्यवर कांशीराम जी के जन्मदिवस 15 मार्च को 'बहुजन समाज दिवस' के रूप में बनाना शुरू कर दिया है। बहुजन समाज दिवस के उपलक्ष्य में बहुजन समाज के इस महानायक को हम शत् शत् प्रणाम करते हैं, जय भीम!

साभार :
बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम स्मृति ग्रंथ
पेज संख्या 9 से 22 तक
एस.एस.गौतम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

कुशल बनो। उत्पादन करो।। अधिकारों के लिए संघर्ष को तैयार रहो।।।

मानवता को वापस भुगतान करें
Pay back to humanity
कुछ भी संभव है
अगर आपको खुद पर विश्वास है

रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारी महासंघ ट्रस्ट

Defence And Multiple Civilian Employee Federation Trust

पंजीयन सं० 34 दिनांक 18/10/2023

भारतीय न्यास अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत

कार्यक्षेत्र समस्त भारत

–: पंजीकृत कार्यालय –

ग्राम व पोस्ट – रिवई (सुनैचा)
थाना – कबरई, जिला महोबा (उ० प्र०)
मो०: **7839007418**
E-mail : damceftrust@gmail.com
Website : www.dbindia.org.in

–: प्रदेश कार्यालय उत्तर प्रदेश :–

म० न० **50B**, तुलसी नगर
नियर पी० ए० सी० गेट
श्याम नगर, कानपुर (उ० प्र०)
मो०: **9506623779**

प्रदेश प्रभारी

बीरबल वर्मा

मो०: **9936429765**

लक्ष्य – रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों की समस्याओं से भारत सरकार एवं सभी सम्बन्धित राज्य सरकारों विभागों को अवगत कराना और उनके निराकरण हेतु कानून बनवाने आदि की मांग करना।
रक्षा और विभिन्न नागरिक कर्मचारियों और अधिकारियों के सहयोग से वंचित, पीड़ित, शोषित प्राणियों के कल्याण हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु तत्पर रहना।
शिक्षा – निःशुल्क शिक्षा हेतु भारत के प्रत्येक जिले में विभिन्न स्तर की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और संचालन करना।
स्वास्थ्य – चिकित्सा सेवाएं निःशुल्क प्रदान करवाना और चिकित्सालयों की स्थापना करना।
सामाजिक सुरक्षा – व्यक्तियों के संकट के समय, जन्म, मृत्यु या विवाह में होने वाले अतिरिक्त व्यय की पूर्ति के लिए लाभ प्रदान करना है।
रक्षा – रक्षा में लगे कर्मचारियों व उनके परिवार से है।
और – सभी
विभिन्न नागरिक कर्मचारी – संगठित और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत कार्मकारों से हैं। (सशस्त्र बलों में कार्यरत कर्मचारियों को छोड़कर)
महासंघ – भारत के नागरिकों का संगठन से है।
ट्रस्ट – विश्वास/भरोसा है।

उस संगठन को दान दें
जिस पर आप विश्वास करते हैं
Make Donations to
an Organization You Believe In

–: उद्देश्य :–

- लक्ष्य की पूर्ति हेतु पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं की नियुक्त करना आदि।
- संचालित शिक्षण/प्रशिक्षण संस्थाओं में गरीब बच्चों को शिक्षण हेतु प्रवेश दिलाना और उनका खर्च वाहन करना।
- रोजगार के सृजन के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना/संचालन करना आदि।
- भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डा० अम्बेडकर के विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करने वाले नागरिकों को ''डा० अम्बेडकर विचार प्रचार रत्न'' से सम्मानित किया जाना।
- प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करना आदि।

अतः आप सभी भारत के नागरिकों से अपील है कि तन, मन, से सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

निवेदक –

सियाराम

राष्ट्रीय संयोजक/न्यासी, **मो०: 9454923394**

अनिल कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम)
मो०: 8593630338, 07897757223
श्रीमती उमेश्वरी देवी
राष्ट्रीय संयोजक (मुद्रण एवं संचार)
मो०: 9005204074, 8756157631
मनोज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (बेसिक शिक्षा विभाग)
मो०: 8787010365
पंकज कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (माध्यमिक शिक्षा विभाग)
मो०: 7906006187
लेखचन्द्र गुप्ता
राष्ट्रीय संयोजक (खेल)
मो०: 9235728318
अजय कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (राज्य कर्मचारी)
मो०: 7007822504
महिपाल
राष्ट्रीय संयोजक (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9935456466
जगदीश प्रसाद दिनकर
राष्ट्रीय संयोजक (हथकरधा विभाग)
मो०: 9455593651
विवेक कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (सामाजिक संगठन)
मो०: 9616961612
श्रीमती सविता
राष्ट्रीय संयोजक (असंगठित क्षेत्र)
मो०: 8400430633
कु० ललिता
राष्ट्रीय संयोजक (महिला विभाग)
मो०: 7985811410
आशीष कुशवाहा
राष्ट्रीय संयोजक (अनुशिक्षण)
मो०: 8318038232
डा० अति दीपादन
राष्ट्रीय संयोजक (स्मारक एवं पार्क कर्मचारी)
मो०: 7269887945, 9258704062
विवेक कुमार चौधरी
राष्ट्रीय संयोजक (आयुध निर्माणियाँ अस्पताल)
मो०: 96969778910
महेश चन्द्र अहिरवार
राष्ट्रीय प्रवक्ता
मो०: 6388370835, 9956845323
विनोद कुमार
राष्ट्रीय संयोजक (संविदा एवं व्यापार)
मो०: 9935783705

–: राज्य कार्यालय छत्तीसगढ़ :–

वार्ड नं० 35 दुर्गा नगर
नियर नगर पालिका निगम कार्यालय के पास
जिला रायपुर
श्रीमती रमा गजभिये
राष्ट्रीय संयोजक (छत्तीसगढ़/महाराष्ट्र)
मो०: 7828273934
आयुष गजभिये
राज्य प्रभारी
मो०: 9131112561
राजबहादुर अहिरवार (बस्तर)
राज्य सहप्रभारी
मो०: 620306631

–: राज्य कार्यालय राजस्थान :–

जी–19, नियर आटो स्टैण्ड
खुदानपुरी, जिला – अलवर
ताराचन्द
राज्य प्रभारी
मो०: 8504063363

–: पूर्वोत्तर राज्य कार्यालय असम :–

ग्राम – चिपरसंगम पार्ट–1
पो० – अलगापुर जिला – हैलाकांदी
बिलालुद्दीन चौधरी
प्रभारी पूर्वोत्तर राज्य
मो०: 9401027750
भवानी बूढ़ा ठोकी
प्रभारी असम राज्य
मो०: 6000539663
हरीनाथ चौहान
राष्ट्रीय संयोजन (असम & बिहार राज्य)
मो०: 6000380690
रितुदास
राष्ट्रीय संयोजक (असम & पं० बंगाल राज्य)
मो०: 8638349801

–: प्रभारी हरियाणा राज्य :–

देवेन्द्र सहरावत
मो०: 9068831086

–: प्रभारी बिहार राज्य :–

अनिलदास # 9651217573
रामप्यार साह # 6263491099

–: प्रभारी म० प्र० राज्य :–

महेन्द्र तुरकर
प्रदेश प्रभारी
मो०: 8878372412
पुष्पेन्द्र अहिरवार
प्रदेश प्रभारी
मो०: 9669376505
रमाशंकर
प्रदेश प्रभारी उ० प्र० (बेसिक शिक्षिक)
मो०: 9450850778
ईश्वरी प्रसाद
राज्य संयोजक उ० प्र० (भारतीय जीवन बीमा निगम)
मो०: 9794366838
रामसिंह
मण्डल संयोजक झांसी
मो०: 9616838281, 6392558232
अनिल कुमार
मण्डल प्रभारी कानपुर
मो०: 9198414002
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक वाराणासी
मो०: 9935363730, 9170836363
दातादीन
मण्डल संयोजक लखनऊ
मो०: 8115511006
सुनील कुमार
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8948990184
सुभाष चन्द्र
मण्डल संयोजक प्रयागराज
मो०: 8303995957
सुभाष कुमार
मण्डल संयोजक कानपुर
मो०: 9695931879
राकेश कुमार
जिला प्रभारी इटावा
मो०: 8009802461

पदाधिकारी बनने के लिए सम्पर्क करें – 9454923394

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

आने वाले समय में हम दुनिया में अपना सही नजारा दिखायेंगे–कांशीराम

(ऊना)

बसेवड़ा (ऊना) पहुँचने पर रात्रि पौने दस बजे जनसभा का आयोजन किया गया। कु. श्याम सिंह तेज के गीतों से कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

डी–एस4 के अध्यक्ष कांशीराम जी ने इस अवसर पर बताया कि अभी आपने नांगल में छोटा सा नजारा देखा है लेकिन आने वाले समय में हम दुनिया में अपना सही नजारा दिखायेंगे। उसी उद्देश्य को लेकर मैं और मेरे साथी इस साइकिल यात्रा पर निकले हैं ताकि हम लोगों को सूखी सलाह न देकर उचित सलाह दे सकें और उन्हें 200–300 किमी. चलने के लिए सलाह दे सकें।

जनसभा को संत बाबा नन्दसिंह, कृपाल सिंह, मस्ताना सिंह तथा निहंग सिंह कालापीर ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन जयदेव पट्ठी ने किया तथा बेलीराम ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन जयदेव पट्ठी ने किया तथा बेलीराम ने आभार व्यक्त किया।

तलबाड़ा (होशियारपुर)

मध्यान्ह 1.30 बजे कारवाँ तलबाड़ा (जिला होशियारपुर) पहुँचा। रविदास मन्दिर तलबाड़ा टाउनशिप में प्रधान रविदास मन्दिर एवं हरनामदास तथा अनेकों लोगों ने सभी साइकिल यात्रियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर बोलते हुए कांशीराम जी ने कहा कि नांगल तक की पूरी यात्रा में हम कहीं भी दो घंटे देरे से नहीं पहुँचे, जबकि नांगल में दो दिन रुकने की वजह से हमें विलम्ब हो रहा है। इसीलिए समयाभाव के कारण सभी साथियों के विचार चाहते हुए भी सुनना सम्भव नहीं है। मैंने गतवर्ष जब पंजाब भ्रमण किया तो यहाँ पढ़े–लिखे लोगों में सामाजिक चेतना कम नजर आई। पंजाब में अनुसूचित जाति के लोग सारे देश की अनुसूचित जातियों में आर्थिक और सामाजिक रूप से अधिक सम्पन्न हैं। उनके पास साधन हैं, पढ़े–लिखे हैं वे अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते, वे सिर्फ गुरु रविदास व डॉ. अम्बेडकर ने बहुत किया, यही बोलते रहते हैं। 'बोलने मात्र से कुछ नहीं होता नारे लगाने या गाने से कुछ नहीं होता। न तो रविदास जी हमारे बीच हैं और न ही डॉ. अम्बेडकर ही हैं। 1956 में उनके हमारे बीच से चले जाने के बाद उनका कारवाँ आगे बढ़ने के बजाय पीछे गया है।'

आपने बताया कि बम्बई में बाबा साहब की जयन्ती पर एक माह में ही एक करोड़ रूपये खर्च होता है लेकिन उनके मिशन के बारे में कुछ नहीं करते। जिस जगह रविदास जी पैदा हुए थे उसी वाराणसी में मन्दिर बनाने के लिए गुणगान किया जाता है, लेकिन उसी वाराणसी में हमारी चमारी चार आने में बिकती है तो उस गुणगान करने से क्या फायदा? इसके बारे में हम कुछ नहीं करते। इन महापुरूषों का मिशन जब–तक नहीं चलाते तब–क कुछ नहीं हो सकता।

कांशीराम जी ने बताया कि आज पंजाब में अनुसूचित जाति के लोग रविदास और डॉ. अम्बेडकर का क्यों गुणगान करते हैं। वह इसलिए कि वे कामयाब हुए हैं। जब मैं और मेरे साथी कामयाब होंगे तब आप लोग हमारे साथ आयेंगे, हमें इतना बड़ा संगठन बनाना है कि इंदिरा गाँधी, चरण सिंह व अटल बिहारी के हाथों में टेप दे देंगे कि नापकर बताओ, जब वे कहेंगे संगठन बड़ा है, तभी हम इसे बड़ा मानेंगे। मैं जिस बात को टालना चाहता था और जब–तक बड़ा संगठन न बन जाये तब–तक किसी झगड़े में पड़ना नहीं चाहता था लेकिन नांगल में हो गया। जब मेरे साथियों के साथ उस तरह का व्यवहार हुआ तो क्या मैं पीछे हट जाता? इसीलिए न्याय दिलाने के लिए मुझे वहाँ दो दिन संघर्ष करना पड़ा। जिन अकालियों ने झगड़ा किया उन्होंने सबके सामने माफी माँगी। दो अधिकारियों को निलम्बित कराया गया। जब हम संगठित हो जायेंगे तो कोई धोखा नहीं हो सकता। जहाँ हमने संगठन न होने के बावजूद भी कामयाबी हासिल की है संगठन बन जाने पर तो हमारे से कोई टक्कर लेने नहीं आयेगा।

आपने बताया कि जालन्धर कार्यक्रम में सिर्फ यातायात पर ही 78 हजार रूपये से अधिक खर्च किया था लेकिन जब दिल्ली महानगर परिषद के चुनाव के लिए चन्दा देने की बात आयी तो उत्तर प्रदेश के उरई जो कि जिला भी नहीं है सारे पंजाब से ज्यादा पैसा आया था। मैंने जालन्धर के साथियों ने साइकिल पर आने के लिए कहा था लेकिन वे माने नहीं, इसीलिए मार्च का कार्यक्रम रखना पड़ा।

इस अवसर पर कांशीराम जी को पगड़ी भेंट की गई तथा कु. हरविन्दर, कु. सुखविन्दर व बीना को दुपट्टे भेंट किये गये। गुरु रविदास मन्दिर, वाल्मिकी सभा तलबाड़ा की ओर से 101 रू. भेंट किये गये।

सभा को सरदार दलीप सिंह, किशन लाल, बचन राम, पाल सिंह, जीवन राम ने भी सम्बोधित किया।

(जम्मू)

5 अप्रैल 1983 को सायं 3.30 बजे कारवाँ परेड ग्राउन्ड जम्मू पहुँचा। **'तेज' के गीतों ने सम**ा बनाया, **कृष्णा देवी ने प्रभावशाली प्रेरणा गीत गाये।**

कांशीराम जी ने बताया कि आज विज्ञान के युग में हम साइकिल क्यों अपना रहे हैं? इस देश के अन्दर 85 प्रतिशत लोग दलित–शोषित समाज के हैं। सरकार ने तीन आयोग बनाए। अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग, पिछड़ा वर्ग आयोग एवं अल्पसंख्यक आयोग। लेकिन आज तक ये पिछड़ा आयोग, पिछड़े वर्ग की परिभाषा नहीं बना सके। 52 प्रतिशत लोग जिन्हें पिछड़े वर्ग में मंडल आयोग द्वारा रखा गया है वे पूरे देश में फैले हुए हैं। जिनकी हालत बहुत बुरी है। कोशिश उन लोगों को करनी चाहिए थी जो देश के मूल निवासी हैं। अगर इस धोखे का मुकाबला करना है तो बहुत बड़े संगठन की जरूरत है। पिछड़े वर्ग (OBC) के लोग 37 करोड़ हैं और वे 3700 जातियों में बटे हुए हैं, इन सबको एक झंडे के नीचे संगठित करके समस्याओं का हल निकल सकता है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर. सी. गाँधी कर रहे थे जिन्होंने आभार व्यक्त किया तथा सेवारमन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दिनांक 6 अप्रैल 1983 को रविदास सभा पक्का तालाब जम्मू पहुँचे। जहाँ पर आज्ञा राम, जनक राज, सरदार सिंह बहुत से नागरिकों ने स्वागत किया।

कांशीराम जी ने इस अवसर पर लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि दोषी हम हैं, दोषी हमारा समाज है, हम अपने घर में बेघर होकर बैठे हैं। हम दूसरों के अधीन रहकर माँग कर खाने वाले लोग हैं। हमारे पास जो छोटे–मोटे साधन हैं उनका सही उपयोग नहीं करते। जो एक वोट का अधिकार टाटा, बिरला, इंदिरा जी को है वह आप सबको भी है। लेकिन हम उसका सही उपयोग नहीं करते। हमें अपने आप को तैयार करना है जिसमें कोई सहायता नहीं करेगा। हम इंसानियत की जिंदगी बसर करना चाहते हैं तो हमें अपनी कमजोरी दूर करना होगा।

(कोट)

प्रातः 9.30 बजे न्यू प्लाट पर चरण दास द्वारा स्वागत किया गया। 10 बजे कोट में न्याय पंचायत के सरपंच द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर 'तेज' व कु. हरविन्दर कौर के गीतों ने जनता को बहुत प्रभावित किया।

उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कांशीराम जी ने बताया कि नांगल की घटना के कारण हम दो दिन विलम्ब से पहुँचे। गुण्डे अकालियों एवं पुलिस की तरफ से वहाँ लाठी चार्ज किया गया। दुख इस बात का है कि पुलिस की जिम्मेदारी है कि वह शांति बनाये रखे, लेकिन उन्होंने ही लाठी चार्ज किया व करवाया। इसीलिए संघर्ष समिति होने के कारण इस शोषण के खिलाफ निहंगों को हमारे साथ देखकर सरकारी कुत्ते भाग गये, जो अकाली दोषी थे उन्होंने माफी माँगी तथा पुलिस के अधिकारियों को निलम्बित कराने के बाद ही हम आगे बढ़े। दूसरे दिन उसी नांगल शहर में पंजाब के देहातों से 28 ट्रैक्टर नांगल थाने के सामने नारे लगाते हुए पहुँचे, जिससे नांगल की ऊँची जातियों, अकालियों में दहशत व्याप्त हो गयी तथा दलितों का उत्साह बड़ा। वहाँ के सारे गुण्डे भाग गए, पुलिस अधीक्षक ने खैर मनाई कि मेरी नौकरी बची, जो पहले ही समझौता हो गया।

(भलवल)

कोट से भलवल तक नाचते गाये आये। जुलूस में महिलाओं और नागरिकों ने विशाल संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर कु. हरविन्दर कौर ने गीत सुनाया बलदेव प्रकाश वेगौत्रा व अन्य नागरिकों द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर कांशीराम जी ने बताया कि हम साइकिल यात्रा पर इसलिए निकले हैं कि जो इस देश के बहुसंख्यक समाज पर धोखा हो रहा है उसका मुकाबला कर सकें तथा बड़ा संगठन उसके लिए बना सकें, जिसके माध्यम से दो वर्ष के अन्दर बड़ा संगठन बना रहे हैं। हम किसी दूसरे की तरफ देखेंगे तो देखते ही रहेंगे, हमें अपने सीमित छोटे–छोटे साधनों का प्रयोग करके ही मुकाबला करना है।

(कबीर कॉलौनी)

सायं 3.30 बजे गिरधारी लाल भगत, पूरन चन्द, धनीराम, सरदारी लाल प्रवक्ता, संतराम आदि लोगों ने कबीर कॉलौनी में कारवाँ का स्वागत किया।

कांशीराम जी ने बताया कि कबीर कॉलौनी का नाम बहुत अच्छा मालूम होता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस दलित–शोषित समाज के बारे में आप बहुत अच्छी जानकारी रखते हैं और हमारे जो संत–महात्मा हुए हैं, उनके बारे में भी आप बहुत जानकारी रखते हैं। आपने बताया कि साइकिल यात्रा, बड़ा संगठन बनाने के तरीकों में से यह एक तरीका है।

दसुआ (धर्मपुर)

7 अप्रैल, 1983 को दोपहर 2 बजे दसुआ में भोजन किया। तदुपरान्त मा. कांशीराम जी ने जनसमूह को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर कांशीराम जी ने बताया कि हम इस जगह कल आने के बजाय आज पहुँचे हैं, इसलिए मैं अपनी सभी साथियों की ओर से क्षमा चाहता हूँ। आने वाली 10 तारीख को बड़ी सभा होने जा रही है उसे सफल बनाने के लिए यह छोटी बैठक रखी है। हम एक दिन विलम्ब से इसलिए आये कि कल जम्मू में बहुत जोर से बारिश व तूफान आ गया था। करीब 7 घंटे बारिश चलती रही इसलिए रूकना जरूरी हो गया था। आपने बताया कि बाबा साहब का कार्य जो उनके बाद रूक गया था, उसे हम फिर से शुरू कर रहे हैं।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4 अंक 5, 9 मई, 1983)

साभार :
मा. कांशीराम साहब
के ऐतिहासिक भाषण खण्ड–2
पेज संख्या 171 से 175 तक
ए. आर. अकेला

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।